–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
जून, 2003 वर्ष 2 अंक 4

कौम का फ़ैसला

जो क़ौमें अपने बारे में खुद फ़ैसला न कर सकें उनकी कोई मदद नहीं कर सकता और जो क़ौमें खुद फ़ैसला कर लें उन के फ़ैसले को कोई बदल नहीं सकता।

(मौलाना अली मियां)

विषय एक नज़र में

- औलियाउर्रहमान — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- नअ़त शरीफ — मौलाना मु० सानी ह़सनी 6
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- इस्लाम का तीसरा स्तंभ जकात — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी 7
- अल्लाह के आदेशों की पाबन्दी और अच्छे उपाय 9
- मुसलमानों की उन्नति का माध्यम — मौ० मु० राबे हसनी 10
- वक्त या तलवार — डा० सईदुर्रहमान आज़मी 12
- वक्त पद्य (बच्चों के लिए) 13
- अरबी मदरसों के बारे में कुछ सच्ची बातें — मौ० अब्दुल करीम पारीख 14
- खलीफ़ाओं की न्याय प्रियता — डा० मु० इज्तिबा नदवी 17
- इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम — आमिना उसमानी 19
- इस्लाम और समाज सुधार — हैदर अली नदी 23
- आपकी समस्याएं और उनका हल — मु० सरवर फ़ारुकी नदवी 25
- प्रश्नोत्तर — मु०मु० तारिक़ नदवी 26
- फलों का राजा आम — मु० उस्लूब 27
- दही — ह़कीम स० गौसुद्दीन 30
- अरब देशों में सुधार की कोशिशें 31
- स्पेन की विजय — मुहम्मद अली जौहर 32
- इस्राईल की कायरता — आसिफ़ अन्जार 33
- भारत के हम वीर सिपाही — हैदर अ़ली नदवी 34
- एकता या इक रंगी — स० शिहाबुद्दीन 35
- बच्चियों की तालीम व तर्बियत — खैरुन्निसां बेहतर 38
- एक तारीखी वाकिआ़ 39
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — मुईद अशरफ नदवी 40

□□□

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

औलियाउर्रहमान

(परमेश्वर भक्त)

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

सुन रखो कि अल्लाह के मित्रों अर्थात परमेश्वर के भक्तों को न कोई भय होगा ना ही वह दुखी होंगे, जो ईमान लाए और (अपना जीवन बिताने में) अल्लाह से डरते रहे। उनके लिए शुभ सूचना (खुशख़बरी) है दुन्या की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत की ज़िन्दगी में भी। अल्लाह की बातें बदलने वाली नहीं। और यह शुभ सूचना बड़ी सफलता है। (पवित्र कुर्आन १०:६२,६३,६४) अल्लाह के मित्रों की अनेक श्रेणियाँ हैं। सबसे कम दर्जा यह है कि आदमी ईमान लाए। जो ईमान ले आएगा और ईमान के विषय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बताई हुई सारी बातों को मान लेगा और मरते दम तक उस पर जमा रहेगा उस की नजात अवश्य होगी।

अल्लाह के मित्रों (भक्तों) में सब से उच्चतर तथा उत्तम श्रेणी उस के रसूलों और नबियों (सन्देष्टाओं) की है उनमें भी दरजात है, कोई कलीमुल्लाह है कोई रूहुल्लाह है, कोई ज़बीहुल्लाह है, कोई ख़लीलुल्लाह है तो कोई हबीबुल्लाह, उन सब पर अल्लाह की सलामती हो।

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद उनके साथियों के दरजात हैं, उनमें भी आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा का दरजा सबसे ऊंचा है। फिर उनमें भी खुलफाए राशिदीन का दरजा दूसरों से बढ़ा हुआ है।

सहाब–ए–किराम के पश्चात उम्मत के दूसरे औलियाउल्लाह का दरजा आता है जिनमें एक से एक, भक्त नज़र आते हैं जिनका नफ़्स मुज़क्का (पवित्र) जो किताब व हिकमत के ज्ञान से परिपूर्ण, जो इहसान की कैफ़ियत में भरपूर, किसी पल भी अपने रब से ग़ाफ़िल (अचेत) न होने वाले। जिनको देख कर अल्लाह याद आए। इन ही अल्लाह के मित्रों अर्थात अल्लाह के वलियों में हम को एक नाम हज़रत अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) का मिलता है। इन पंक्तियों में मैं उनके विषय में कुछ बातें संक्षित में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० का जन्म स० ४७१ हिजरी में नीफ गांव में हुआ जो ईरान देश के गीलान क्षेत्र में है। ग, क़ो अ़रब लोग ज, से बदल लेते हैं इस लिए उसको जीलान भी कहा गया अतः शैख़ को जीलानी और गीलानी कहा गया। पिता जी का नाम अबू स्वालेह था। आप हमारे हुजूर, अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के खान्दान से थे। बचपन से जवान होने तक अपने पिता जी की ही सेवा तथा संगत में रहे। इससे ज्ञात हुआ कि आप की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता ही के संरक्षण में हुई। ४८८ हिज्री में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बग़दाद गये। इसी यात्रा में वह प्रसिद्ध घटना घटी जिस में आप ने खुद से अपनी छुपी हुई गिन्नियां डाकुओं को बता दी थीं जिस से प्रभावित होकर डाकुओं ने डकैती से तौबा कर ली थी। आपने बग़दाद में अबुल वफ़ा अ़ली बिन अ़कील, अबू मुहम्मद बिन हुसैन, अबू सईद बिन मुबारक मख़ज़ूमी, मुहम्मद बिन हसन बाक़ल्लानी, अबू सईद बिन अब्दुल करीम मुहम्मद बिन अ़ली मैमून जैसे सुप्रसिद्ध विद्वान से उच्च शिक्षा प्राप्त की। आपने अपने नफ़्स के विरोध में ऐसे कठोर मुजाहदे किये जिनकी कल्पना भी कठिन है। परिणाम स्वरूप उम्मते इस्लामिया में आप को बड़ा ऊंचा

स्थान मिला। अगरचि वह हंबली मत के अनुयायी थे परन्तु सभी मुसलमान उन का बड़ा आदर सम्मान करते हैं और उनसे बड़ा ही प्रेम रखते हैं लेकिन बड़े खेद की बात है कि लोग उनसे प्रेम तो रखते हैं परन्तु उनकी शिक्षाओं को नहीं अपनाते।

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० ने शिक्षा पूरी करने के पश्चात अपनी ज़िन्दगी इस्लाम उपदेश में बिताई। उन्होंने बग़दाद में अपने उस्ताद मखजूमी का मदरसा चलाया वह बराबर इस्लाम, तथा अल्लाह की मारिफ़त (ईश ज्ञान) पर भाषण देते रहे। ईश ज्ञान तथा ईश प्रेम पर उनके भाषण इतने प्रभाव शाली होते कि कभी कभी भाषण स्थल (तकरीर की मजलिस) ही में बाज लोग प्राण त्याग देते। हम यहां उनके कुछ महत्वपूर्ण कथनों का उल्लेख करते हैं। आप कुछ अ़रबी के शिअ़र (कविता) पढ़ा करते उनका अर्थ इस प्रकार है :–

पीर (उपदेशक) में यह पांच बातें न हों तो वह पीर (आत्म गुरू) नहीं दज्जाल (पथ भ्रष्टा फैलाने वाला कपटी) है।

१. शरीअ़त (इस्लामी विधान) से परिचित हो और उसका अनुयायी हो।
२. हक़ीक़त (तथ्य ज्ञान) से भली भांति परिचित हो।
३. लोगों से अच्छे स्वभाव के साथ प्रसन्नता पूर्वक मिले तथा अतिथियों (मेहमानों) का सम्मान करे।
४. ह़राम व ह़लाल (वैध, अवैध) के आदेशों से परिचित हो।
५. उदार चरित्र हो। रिया (दिखावा) ह़सद (ईर्ष्या) तमअ़ (लालच) हुब्बे दुन्या (सांसारिक मोह) अुज्ब (अभिमान) गफ़लत (अचेतना) अ़ैशतलबी (भोग बिलास की चाहत) सुस्ती (कायरता) जैसे अवगुण उसमें न हों तथा वह याचकों (तालिबों) का संशोधन कर सके।

फ़रमाया : मैं यह पसन्द करता हूं कि दुन्या की दौलत मेरे पास हो तो मैं सब भूखों को खिला दूं तथा निर्धनों में बांट दूं।

फ़रमाया : खुदा को छोड़कर जो दूसरों से कोई चीज़ मांगता है वह खुदा से ग़ाफ़िल (अचेत) है। वह खुदा को नहीं पहचानता।

फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने जो मुक़द्दर किया है उसको अपने वक़्त पर ज़ाहिर करता है। उसकी बादशाहत (राज्य) में उसका कोई सहायक नहीं न किसी का उस पर ज़ोर (बल) है कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उससे कुछ करवा ले। ऐसे एअ़तिक़ादात (विश्वास) ख़राब हैं। वह जो चाहता है करता है और जो नहीं चाहता नहीं करता।

शैख़ की बहुत सी तकरीरें लोगों ने लिख ली थीं। उनकी तकरीरों का अनुवाद उर्दू में छप चुका है। शैख की प्रसिद्ध किताब गुनयतुत्तालिबीन है। शैख का देहान्त १७ रबीअुल अव्वल (स० ५६१ हि०) को हुआ। अल्लाह के वलियों (भक्तों) से प्रेम रखना आवश्यक है परन्तु यह बातें ध्यान में रहें।

पवित्र क़ुर्आन में बताया गया है : और जो ईमान वाले हैं वह अल्लाह की मह़ब्बत (प्रेम) सबसे ज़ियादा रखते हैं (२:१६५) । ईमान लाते ही अल्लाह की मह़ब्बत (प्रेम) उसके दिल में पैदा हो जाती है। यह महब्बत ईमान के बल के अनुकूल ईमान वालों में कम ज़ियादा होती है। जिस में जितनी मह़ब्बत अधिक होती है वह उतना ही पूर्ण होता है। अल्लाह तआ़ला ने अपने प्रेमियों को अपने नबी के अनुकरण का आदेश दिया है, फरमाया :

अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरा इत्तिबाअ़ (अनुकरण) करो तो अल्लाह तुम को अपना प्रिय बना लेगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और अल्लाह तो बड़े दयालु महा कृपालु हैं। (३:३१) यहां यह बात याद रहे कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इत्तिबाअ़ (अनुकरण)

(शेष पृष्ठ ११ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

और जब उनमें से किसी को लड़की की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उसका मुंह काला पड़ जाता है और वह गुस्से के घूंट पी कर रह जाता है इस ख़ुशख़बरी (जिसे वह बुरी ख़बर समझता है) के रंज से वह लोगों से मुंह छुपाता फिरता है।

(पवित्र क़ुर्आन १६:५८,५९)

आमतौर से देखा जाता है कि जब किसी के घर में लड़के के बजाए लड़की पैदा होती है तो ख़ुशी नहीं होती बल्कि बहुत से लोग लड़की पैदा होने पर दुख प्रकट करते हैं, अरब वालों का भी यही हाल था बल्कि उनमें तो कुछ लोग अपनी लड़कियों को जीवित जमीन में गाड़ देते थे।

एक सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपना वाक़िअ़: (घटना) सुनाया कि इस्लाम से पहले मेरी एक लड़की थी। जब मैं उसको बुलाता दौड़ कर मेरे पास आ जाती । एक दिन वह मेरे बुलाने पर खुश खुश दौड़ी आई। मैं आगे बढ़ा वह मेरे पीछे पीछे चली आई। मैं आगे बढ़ता चला गया। जब एक कुंए के पास पहुंचा जो मेरे घर से कुछ दूर न था और लड़की भी उसके क़रीब पहुंची तो मैं ने उसका हाथ पकड़ कर कुंए में डाल दिया वह अब्बा अब्बा कह कर पुकारती रही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह किस्सा सुनकर इतना रोए कि दाढ़ी तर हो गई और फ़रमाया कि जाओ इस्लाम के बाद पहले के गुनाह मुआ़फ हो गए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम पर माओं की अवज्ञा (नाफरमानी) और लड़कियों को जीवित गाड़ देने को हराम तथा महा पाप बताया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लड़कियों को जीवित गाड़ देने ही से नहीं रोका अपितु उनका सम्मान भी बढ़ाया, फरमाया जो दो लड़कियों का पालन पोषण (परवरिश) करे यहां तक कि वह जवान हो जाएं तो क़ियामत में इस प्रकार (दो उंगलिया उठा कर फ़रमाया) करीब होगा।

सहब–ए–किराम का यह हाल था कि लड़कियों की परवरिश के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्के से चलने का इरादा किया तो हज़रत हमज़ा (रज़ि०) की यतीम बच्ची उमामा चचा चचा कहती दौड़ी आई। हज़रत अ़ली ने हाथों में उठा लिया और हज़रत फ़ातिमा को दिया यह लो तुम्हारे चचा की बेटी है। हज़रत अ़ली (रज़ि०) के भाई हज़रत जअ़फ़र (रज़ि०) ने कहा कि बच्ची मुझको मिलना चाहिए कि यह मेरे चचा की लड़की है और इसकी ख़ाला मेरे घर में है। हज़रत ज़ैद ने आगे बढ़कर कहा कि हुजूर यह लड़की मुझ को मिलना चाहिए कि हमज़ा मेरे दीनी भाई थे। हज़रत अ़ली ने कहा कि यह मेरी बहन भी है और पहले मेरी ही गोद में आई है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया कि ख़ाला मां के बराबर होती है।

और उसकी ख़ाला की गोद में दे दिया।

नअ़त शरीफ़

मौ० मुहम्मद सानी हसनी

वह सरवरे दो आ़लम।
वह रहमते मुजस्सम ।।
वह फ़ख्रे वुल्दे आदम।
हज़रत रसूले अकरम ।।
महबूब हैं ख़ुदा के।
उनपर फ़िदा दो आलम।।
वह बे कसों के वाली।
वह बे बसों के हमदम।।
हर जुंबिशे लब उनकी।
ज़ख्मी दिलों का मरहम।।
वह अब्र हैं करम के ।
वह प्यार की हैं शबनम।।
आती है याद उनकी ।
होता है दूर हर ग़म।।
लब पर है नामे नामी।
दिल में है इश्क़े पैहम।।
फरमाएं जो वह हक़ है।
बाक़ी जो है वह मबहम।।
उन पर दुरूद पैहम ।
उन पर सलाम हर दम।।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

६१. ईमान वालों को हर मोमिन की तकलीफ़ का एहसास होना चाहिए।

हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया आपस में मुहब्बत करने, एक दूसरे पर आपस में रहम करने और एक दूसरे पर मेहरबानी करने में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म (शरीर) के समान है कि एक अज़्व (अंग) को तकलीफ़ होती है तो पूरा जिस्म बुखार व बेचैनी में मुब्तिला हो जाता है।

(बुखारी – मुस्लिम)

६३. मुसलमानों को कमतर समझने और उनका साथ छोड़ने की हुरमत :

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आपस में हसद न करो, दाम देकर क़ीमत न बढ़ाओ, न आपस में बुग्ज़ व अदावत रखो न एक दूसरे से सम्बन्ध तोड़ो और अपना सौदा दूसरे के बेचते वक्त आगे न करो अल्लाह के बन्दे भाई भाई हो जाओ, मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर जुल्म करे न उसको बेयार व मददगार छोड़े और न उसको हक़ीर समझे फिर आप अपने सीने मुबारक की तरफ़ इशारा करके फरमाने लगे कि परहेज़गारी इस जगह है इसी तरह तीन बार किया आदमी के लिएं इतनी ही बुराई काफ़ी है कि वह अपने को हक़ीर समझे हर मुसलमान पर मुसलमान का खून उसकी इज्जत और उसका माल हराम है। (मुस्लिम)

६४. मुसलमानों से नाहक़ बुरा गुमान करने की हुरमत :

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया बदगुमानी से बचो, बद गुमानी सबसे झूठी बात है किसी की बात कान लगा कर मत सुनो किसी के ऐब की खोज बीन न करो एक दूसरे से (गलत कामों में) बढ़ने की कोशिश न करो आपस में हसद न करो आपस में गुस्सा न करो और न एक दूसरे का बाई काट करो हो जाओ अल्लाह के बन्दे भाई भाई।

(मुस्लिम)

६५. तीन दिन से ज्यादह मुसलमान से सम्बन्ध तोड़ने की मुमानियत हजरत

अबू अयूब अन्सारी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि ने फरमाया किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन रात से ज्यादह अलग रहे और मुलाक़ात के वक्त एक दूसरे से मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहले करे। (बुखारी)

६६. मुसलमानों को तकलीफ देने और उनसे बद ज़बानी करने की हुरमत :

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०)ने फरमाया कि मुसलमान तो वह है जिसके हाथ और ज़बान से मुसलमान महफ़ूज़ रहें।

६७. कुफ्रिया आमाल से बचने और एक दूसरे को कत्ल करने की हुरमत :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने हज्जतुलविदा में फरमाया तुम्हारा भला हो मेरे बाद काफिर न हो जाना कि आपस में एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (मुस्लिम)

ग़ीबत करने पर सख़्त सज़ा :

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि ने फरमाया जब अल्लाह तआ़ला ने मेराज कराई तो मैं ऐसे लोगों के पास से गुजरा जिनके पीतल के नाखून थे उन से वह अपने सीनों और चेहरों को नोच रहे थे मैंने हज़रत जिब्रईल (अलै०) से पूछा यह कौन लोगे हैं ? उन्होंने बताया कि यह वह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे (ग़ीबत करते थे) और उनकी इज़्ज़त व आबरू को पामाल कर देते थे। (अबूदाऊद)

१०३. मुनाफिकों के लिए वअ़ीद– हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया ऐ केवल ज़बान से ईमान लाने वालो, दिल से यकीन न करने वालो। मुसलमनों की न गीबत करो और न उनकी इज़्ज़त के पीछे पड़ो जो उनकी इज्जत के पीछे पड़ेगा तो उस शख्स की इज़्ज़त के पीछे अल्लाह तआ़ला पड़ेगा उसको उनके घर में रुसवा कर देगा।

(अबूदाऊद)

(शेष पृष्ठ ६ पर)

इस्लाम का तीसरा स्तम्भ ज़कात

मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी

कुरआन मजीद में सूरः तौबा की ग्यारहवीं आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया –

अनुवाद – "लेकिन अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ के पाबन्द हो जाएं और ज़कात देने लगें तो वह तुम्हारे भाई हो जायेंगे।"

इस्लाम में ज़कात का महत्व

कुरआन में नमाज़ के साथ ज़कात का उल्लेख हर जगह आया है, इसके अलावा मुसलमानों के गुण जहां–जहां बयान किये गये हैं वहां भी नमाज़ और जकात की बात एक साथ कही गई है। हमारे नबी (सल्ल०) ने ज़कात को इस्लाम का स्तम्भ बताया है। आपका इरशाद है कि इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है, इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।

आप (सल्ल०) से पूछा गया कि "इस्लाम क्या है? आपने जवाब दिया कि "अल्लाह की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो, फ़र्ज़ नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो।"

इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था का मौलिक स्वरूप

कुरआन मजीद ने तमाम इन्सानी मुआमलों को अल्लाह के हवाले कर दिया है कि इन्सान को सिर्फ एक चीज़ का ज़िम्मेदार बनाया है और वह चीज है खिलाफत का मन्सबं अल्लाह तआला का इरशाद है:

अनुवाद – "और अल्लाह के उस माल में से उन्हें भी दो जो उसने तुम्हें दिया है।" (सूरः नूर – ३३)

"और जिस माल में से उसने तुमको दूसरों का जानशीन बनाया है उसमें से खर्च करो।" (सूरः हदीद–७)

"तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते हो, अन्ततः आसमान और जमीन सब अल्लाह ही के रह जायेंगे।"

(सूरः हदीद–१०)

इस वस्तुस्थिति के फ़लस्वरूप होना तो यह चाहिए कि इन्सान अपनी हर मिलकियत से हाथ खींच ले और उसको ज़मीन –जायदाद में तनिक भी उपयोग का हक़ बाकी न रहे, लेकिन अल्लाह की रहमत और हिकमत ने इन्सान के साथ यह मुआमला नहीं किया, यदि ऐसा होता तो इस में कोई आश्चर्य की बात न थी किन्तु इससे मानव आत्मविश्वास, हौसला और लगन, उमंग और तरंग तथा जिज्ञासा की ललक और संक्षेप में जीवन के उस रस व स्वाद से वंचित रह जाता है, जो बच्चों को अपने घर और अपने माता पिता की चीज़ों को अपना बताने से वंचित हो जाये तो वह निष्ठा व लगन, सद्भावना, उन चीजों की सुरक्षा और उनके बढ़ावे की उमंग से कट कर रह जायेगा और मानव के अस्तित्व व विकास के लिए यह चीज़ें अपरिहार्य हैं। यदि जीवन में ललक और उमंग और अपना होने की भावना न हो तो यह दुन्या एक बड़ा कारखाना बन कर रह जायेगी। जिसमें मानव मशीन के गूंगे बहरे कलपुरजों की तरह सक्रिय होंगे न उनके पास दिल होगा, न आत्मा, न तुष्टि न रस। जीवन नीरस होकर रह जायेगा। इसलिए कुरआन मजीद में माल को मानव की ओर समर्पित करने की बात बार–बार कही गई है, इरशाद होता है :

अनुवाद – "और आपस में एक दूसरे का माल नाजाइज़ तौर पर मत खाओ, और न उसे हुक्काम तक पहुंचाओ जिससे लोगों के माल का एक हिस्सा तुम गुनाह से खा जाओ यद्यपि तुम जान रहे हो।"

(सूरः बक़रः १८८)

ज़कात की एक निश्चित, विशिष्ट और व्यापक व्यवस्था

जब इस्लामी समाज का भरपूर विकास हो चुका और हर पहलू से उसमें मज़बूती आ गई और वह एक ऐसी विशाल सोसाइटी बन गई जिसमें मालदार भी थे और ग़रीब भी, मध्यवर्गीय लोग भी थे और कंजूस भी, उदार, सखी और अनुदार तथा स्वार्थी भी, पक्के ईमान वाले भी थे और कमज़ोर ईमान वाले भी तो अल्लाह की बड़ी हिकमत थी कि उसने ऐसी सोसाइटी के लिए ऐसा स्पष्ट और निश्चित निसाब (पैमाना) निर्धारित कर दिया जिसकी मात्रा, संख्या, सिद्धान्त, व शर्त, अ़लामत व निशान सब पूरी तरह स्पष्ट और निर्धारित हैं। यह निसाब न इतना अधिक है कि मध्यम वर्ग इसके

बारे में परेशान हो जाये न इतना कम कि दौलतमन्द तबका उदार लोगों की निगाह से गिर जाये। इसको किसी की राय या हिम्मत व हौसले पर नहीं छोड़ा गया, न भावुकता के हवाले किया गया जिसमें उतार चढ़ाव हर समय होता रहता है, इसको कानून बनाने वालों और विद्वानों अथवा शासकों के हवाले भी नहीं किया गया, इसलिए कि उन पर भी पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता और वह भी लालसा से सुरक्षित नहीं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए ज़कात अपने निसाब व मिक़दार (मात्रा) के साथ फ़र्ज़ की गई।

ज़कात किस चीज़ पर वाजिब है ?

हमारे नबी ने ज़कात की मात्रा निर्धारित कर दी है और उन चीज़ों को इंगित भी कर दिया है जिन पर ज़कात फ़र्ज़ है। आपने यह भी बता दिया है कि ज़कात कब वाजिब होगी। आपने इन चीज़ों की चार क़िस्में की हैं और यह चारों ऐसी हैं जिनसे लगभग हम सब को वास्ता पड़ता है – (१) खेती व बाग़; (२) पशु–ऊंट, गाय, बकरी आदि; (३) सोना, चांदी आदि और (४) तिजारत (व्यापार) का माल।

ज़कात साल में एक बार फ़र्ज़ है, खेती व बाग़ का साल उस समय पूरा समझा जायेगा जब फ़सल पक जाये। अगर ज़कात हर महीने या हर हफ़्ते देनी होती तो यह दौलतमन्द लोगों के लिए बड़े घाटे की हो सकती थी और यदि जीवन में एक बार फ़र्ज़ होती तो इस का घाटा दीन–दुखियों को उठाना पड़ता, इसलिए इस को हर साल अदा करने को कहा गया है। ज़कात की मात्रा का निर्धारण निसाब के मालिकों की मेहनत, प्रयास, और उनकी सहूलत व मशक्कत को सामने रखकर किया गया है, अतएव जो माल आदमी को अचानक और एकबारगी मिल जाये (जैसे खनन से प्राप्त धन) तो उस पर साल बीतने का इन्तिजार न किया जायेगा, और जिस समय वह उसको प्राप्त होगा उसी समय उसका पांचवां हिस्सा उस पर वाजिब हो जायेगा। हां, जिसकी प्राप्ति में स्वयं उसकी मेहनत शामिल हो तो उस पर दसवां हिस्सा वाजिब होगा। जैसे वह खेती व बाग़ आदि जिसके जोतने बोने का कार्य तो वह स्वयं करता है परन्तु उसकी न सिंचाई उसको करनी पड़ती है न उसके लिए कुंआ खोदना और रहट आदि लगाना पड़ता है बल्कि बरसात के पानी से सिंचाई करता है हां यदि कोई व्यक्ति डोल अथवा किसी और साधन से उसकी सिंचाई करता है। तो उस पर बीसवां हिस्सा वाजिब होता है, अगर कोई ऐसा काम हो जिसमें बढ़ोत्तरी मालिक की मेहनत पर निर्भर हो और उसकी देखरेख व सुरक्षा उसके जिम्मे हो तो उस पर चालीसवां हिस्सा वाजिब होगा।

ज़कात का निसाब :

चांदी के लिए दो सौ दिरहम और सोने के लिए बीस मिस्काल, ग़ल्ला और फलों के लिए पांच वसक़ बकरी के लिए चालीस बकरियां, गाय के लिए तीस और ऊंट के लिए पांच निर्धारित किया गया है।

जकात टैक्स या जुर्माना नहीं, अ़िबादत है

जक़ात कोई टैक्स या जुर्माना या सरकारी मुताल्बा नहीं है। वह नमाज़, रोज़ा की तरह अ़िबादत है, और खुदा को खुश व राज़ी करने का एक साधन है। इसके अदा करने में एहसान की भावना नहीं होनी चाहिए और अपने को बड़ा नहीं समझना चाहिए, बल्कि विनम्रता होनी चाहिए और ज़क़ात लेने वाले के प्रति एहसानमन्द होना चाहिए ज़क़ात के अधिकारी लोगों को स्वयं तलाश करना चाहिए यह भी बेहतर समझा गया है कि एक ही जगह के मालदारों से निकालकर वहीं के ग़रीबों में तक़सीम हो (सिवाय इसके कि वहां इसके मुस्तहिक़ न पाये जाते हों)। कुरआन मजीद में जक़ात की जितनी प्रशंसा की गई है सूद (ब्याज) की उतनी ही निन्दा की गई है, सूद इस्लाम में हराम है।

आवश्यकता से अधिक माल को दान करने की प्रेरणा

ह० मुहम्मद (सल्ल०) ने माल खर्च करने की उम्मत को ऐसी प्रेरणा और नसीहत फ़रमायी है कि जिस को पढ़कर ऐसा विचार होने लगता है कि फ़ाज़िल माल में शायद आदमी का कोई हक़ नहीं। निम्नलिखित हदीसों को पढ़ने के बाद एक व्यक्ति, जब अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेता है, और उस आराम और सुख–सुविधा को देखता है जो उसे प्राप्त है तो उसको बड़ी कठिनाई महसूस होती है और उसको हर चीज़ आवश्यकता से अधिक और फ़ाज़िल महसूस होने लगती है और यह सुन्दर वस्त्र, तरह, तरह के खाने, आरामदेह सवारियां और जीवन के सुख साधन की बाहुल्यता उसको ग़लत और नाजायज़ नज़र आती है, यद्यपि यह केवल प्रेरणा की बात है, शरई हुक्म और कानून की बात नहीं। लेकिन हमारे नबी का आचरण यही

था। आप ने फ़रमाया –

"जिसके पास एक सवारी अधिक व फाज़िल हो तो जिसके पास एक भी सवारी न हो उसको दे दे। जिसके पास एक नाशता फाज़िल हो उसको देदे जिसके पास नाश्ता न हो।"

"जिसके पास दो व्यक्तियों का खाना हो तो वह तीसरे को भी खाना खिलाये, और जिसके पास तीन का खाना हो वह चौथे को शामिल करे।"

"मुझ पर ईमान नहीं लाया वह व्यक्ति जो पेट भर कर सोता रहा और उसका पड़ोसी भूखा रहा, यद्यपि उसको इस बात की खबर थी।"

एक और हदीस में है कि एक व्यक्ति हमारे नबी के पास आया और कहने लगा, "ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे कपड़ा पहनाइये ।" आप ने कहा क्या तुम्हारा कोई ऐसा पड़ोसी नहीं है जिसके पास दो जोड़े फ़ाज़िल हों। उसने निवेदन किया एक से जियादह हैं। आपने फ़रमाया, "फिर अल्लाह जन्नत में उसको और तुमको जमा न करे।"

इस्लाम की नज़र में इन्सान की क़ीमत व सहृदयता का महत्व

हमारे नबी सल्ल० ने इन्सानी मर्तबा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सहृदयता को सर्वोत्कृष्ट बताया। मशहूर कुदसी हदीस है कि "अल्लाह कियामत के दिन अपने बन्दे से कहेंगे कि मैं बीमार हुआ तो तू मेरा हाल लेने नहीं आया, वह कहेगा, रब। मैं कैसे आपका हाल लेने आता आप तो सारे जहानों के पालनहार हैं। अल्लाह तआ़ला फरमायेंगे कि तुझको मअ़लूम नहीं था कि मेरा अमुक भक्त बीमार था लेकिन तू उसे देखने नहीं गया, अगर तू उसकी अ़ियादत करता तो मुझे उसके पास पाता। ऐ आदम की औलाद ! मैंने तुझ से खाना मांगा था तूने मुझे खाना नहीं दिया, वह कहेगा ऐ रब मैं कैसे आप को खानादेता आप तो सब के पालनहार हैं। अल्लाह तआला फरमायेगा कि तुझको खबर नहीं कि मेरे फलां बन्दे ने तुझ से खाना मांगा और तूने उसको खाना नहीं दिया, अगर तू उसको खाना खिलाता तो वह मेरे पास पहुंचता। ऐ आदम की सन्तान मैं ने तुझ से पानी मांगा तूने मुझे पानी नहीं पिलाया। वह कहेगा ऐ परवर दिगार। मैं आपको कैसे पानी पिलाता आप तो सारे जहान के पालनहार हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि मेरे अमुक भक्त ने तुझ से पानी मांगा था तूने उसको पानी नहीं पिलाया अगर तू उस को पानी पिला देता तो तू मुझ को उस के पास पाता।" (मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस समय तक पूरा मुसलमान नहीं होगा जब तक कि अपने भाई के लिए भी वही न चाहे जो अपने लिए चाहता है। (बुख़ारी)

(पृष्ठ ६ का शेष)

१०४. मुसलमान को मुनाफिक से बचाने वाले के लिए अल्लाह की रहमत :

हज़रत मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जिस व्यक्ति ने किसी मोमिन को मुनाफ़िक से बचाया, मुझे याद पड़ता है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तो अल्लाह क़ियामत के दिन एक फ़रिश्ता भेजेगा जो उसके गोश्त को जहन्नम की आग से बचाएगा और जो शख़्स किसी मुसलमान की इ़ज़्ज़त पर हमला आवर होगा कि अपने इस फ़ेल से उसमें ऐब लगा दे तो अल्लाह तआ़ला उसको जहन्नम के पुल पर रोक लेगा यहां तक कि वह ऐब लगाने का तावान दे कर छुटकारा हासिल करे। (अबू दाऊद)

९८. मुसलमान को गाली देना फिस्क़ है –

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि मुसलमान को गाली देना फिस्क़ (गुनाह) है और उसका कत्ल करना कुफ़्र है। (मुस्लिम)

९९. एक दूसरे के माल को नाहक़ लेने की मुमानियत –

हजरत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया जिसने किसी मुसलमान का हक़ क़सम खा के छीना अल्लाह तआला ने उसके लिए जहन्नम में दाखिला जरूरी कर दिया और जन्नत को उस पर हराम कर दिया एक शख्स ने पूछा अल्लाह के नबी चाहे वह थोड़ी ही चीज़ हो आप (सल्ल०) ने फरमाया चाहे वह पीलू की टहनी ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

१००. इतना मुसलमान काबिले एहतिरा है – हज़रत अबू हुरैरा से

रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया जिसने अपने भाई की तरफ किसी लोहे (धारदार चीज़) से इशारा किया फरिश्ते उस वक्त तक उस पर लानत करते रहते हैं जब तक यह उसको छोड़ न दे चाहे वह बाप या मां के रिश्ते से उसका भाई ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

१०१. हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया बिना किसी वजह के मुसलमान की इज्जत व आबरू पर जबान दराज़ी करना बदतरीन जुल्म है। (अबू दाऊद) कि अपने इस काम से उसमें ऐब लगा दे तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम के पुल पर रोक लेगा जब तक कि उसने जो बुहतान लगाया है उसका बदला देकर छुटकारा न हासिल कर ले। (अबू दाऊद)

अल्लाह के आदेशों की पाबन्दी और अच्छे उपाय
मुसलमानों की उन्नति का माध्यम हैं

हज़रत मौलाना सैयद राबे हसनी नदवी

मुसलमानों के चौदह सौ साल का इतिहास इस्लाम और उस के विरोधियों के बीच संघर्ष से भरा हुआ है। मुसलमानों को इसके नतीजे में उन्नति और पतन दोनों दशाओं से गुज़रना पड़ा है। अल्लाह तआला की तरफ़ से उम्मत को अस्तित्व और सम्मान का स्थान प्राप्त है जो उसको बराबर मिलता रहेगा अलबत्ता वह आज़माइशों से भी गुज़रती रही और उभरती रही है और यह सिसिला बाद में भी चल सकता है परन्तु इस को पूरी तरह से पतन कहीं पेश नहीं आया। यह कभी किसी एक क्षेत्र में कभी दूसरे क्षेत्र में और कभी किसी एक काल, कभी किसी दूसरे काल में पेश आता रहा है ओर अब वर्तमान दशा में भी उसके उभरने और सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने की पूरी आशा है। यदि ऐसा न होता रहता तो आज वह जिस संख्या में और जिन भौतिक (माद्दी) और सम्मान की दौलत से मालामाल है न हुई होती और यही कारण है कि इस्लाम और मुसलमानों के विरोधियों के दिलों में इस उम्मत से ईर्ष्या और शत्रुता की भावना का सिलसिला समाप्त नहीं हुआ और संसार की दूसरी क़ौमें अपनी अपनी जगह पर और अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर भी मुसलमानों की उभरती हुई हैसियत और श्रेष्ठता से परेशानी महसूस कर रही हैं और मुसलमानों को कमज़ोर कर देना चाहती हैं यद्यपि इस्लाम मुसलमानों के दिलों में इंसानी हमदर्दी और सब इंसानों के साथ भलाई की ऐसी भावना पैदा कर देता है जो दूसरों को अकारण हानि पहुंचाने से उनको बाज़ रखती है। इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि मुसलमानों को अल्लाह तआला ने किसी दूसरे धर्म वाले के धर्म को बलपूर्वक बदलने से मना कर रखा है जिसके कारण मुसलमानों ने अपने शासन काल और शक्ति और उन्नति के दौर में भी किसी को अपना धर्म छोड़ने पर और इस्लाम धर्म धारण करने पर मजबूर नहीं किया। हां इस्लाम यह ज़रूर ताकीद करता है कि मुसलमानों को ख़ुदा की मारिफ़त (ईशज्ञान) और सत्य की जो जानकारी हुई है वह दूसरों को भी बताएं और उन तक पहुंचाएं और इस्लाम ने उनको केवल इस बात की ताकीद ही नहीं की है बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से इस बात पर सहायता और मदद का वादा भी है। चुनानचः अल्लाह तआला की सहायता और मदद जब कभी मुसलमानों से हटी है, उनकी इस अमल में कोताही और दीन व सदाआचरण की पाबन्दी में कमी के कारण हटी है और चूंकि दीन की मदद अर्थात अल्लाह तआला के आदेशों की पाबन्दी और दावतेहक़ (सत्य के प्रचार) ही की बुन्याद पर अल्लाह तआला ने मुसलमानों से अपनी इस मदद का वादा किया है। अतएव जब भी मुसलमानों को उम्मत की हैसियत से पतन व मुसीबत का सामना करना पड़ा तो उपरोक्त आदेशों के पालन में कोताही के कारण सामना करना पड़ा। अतः यह समझने की बात है कि मुसलमानों की मुसीबतों की बुन्यादी वजह मुसलमानों की तरफ़ से अल्लाह के आदेशों की पाबन्दी और अच्छे उपाय में होने वाली कोताही बनती है। इस के साथ साथ इस्लाम उनको बिलकुल नहीं सिखाता कि वह दूसरों को अकारण तकलीफ़ दें या उनको हानि पहुंचायें बल्कि उनके साथ सदाचार और रवादारी बरतने की ताकीद की गई है और मुसलमानों का आमतौर पर यही अमल भी है। परन्तु अफ़सोस है कि इस्लाम के सिलसिले में इसके विरोधियों ने यह भ्रम फैला रखा है कि वह ज़ोर और ज़बर्दस्ती का धर्म है और उन्होंने क़ुर्आन मजीद की उन आयतों का हवाला देने की कोशिश की है जिनमें क़ुर्आन मजीद के उतरने के ज़माने में मुसलमानों के साथ मक्का के कुफ़्फ़ार और मुश्रिक लोगों की तरफ़ से तेरह चौदह साल तक लगातार दुश्मनी करते रहने और उस पर उनके लगातार सब्र करने के बाद भी उनके दुश्मनों की तरफ़ से हमला करने और उनसे युद्ध करते रहने पर अन्ततः उन्हें उनके अत्याचारों का सख़्त जवाब देने का उनको आदेश दिया गया है। इसमें यह बात समझने की है कि किसी देश का दुश्मन उस देश पर हमला करे

और जान व माल को हानि पहुंचाए तो क्या यह नहीं कहा जाएगा कि इस दुश्मन को मारो।

क़ुर्आन मजीद की आयत सही ढंग से न पढ़ने और न समझने की सूरत में इस्लाम पर हिंसा का ग़लत आरोप लगाया जाता है, हालांकि क़ुर्आन मजीद में साफ़ साफ़ यह आदेश भी आया है कि दुश्मन के साथ ज़्यादती न करो केवल जितना अत्याचार किसी ने किया, उसी हद तक उससे बदला लो और यह भी आया है कि कोई मुश्रिक (काफ़िर) तुम्हारे पास आजाए तो उसको मेहमान की तरह रखो ताकि वह अल्लाह तआ़ला का कलाम सुन सके फिर उसको सुरक्षा के साथ सुरक्षित जगह तक पहुंचा दो। वास्तव में क़ुर्आन मजीद को उसके सही संदर्भ में न पढ़ने के कारण इसके विरोधी अपनी मन मानी व्याख्या करते हैं। यह इल्मी बद्दयान्ती (शैक्षिक बेईमानी) भी है और वास्तविक्ता को बदल कर पेश करने की हर्कत है जों प्रत्यक्ष रूप से जानबूझ कर की जा रही है। इसलिए इस पर अफ़सोस व नफ़रत का ही इज़हार किया जा सकता है। इस्लाम की तालीम का इंसानी भलाई व सहानिभूति का व्यवहार जो क़ुर्आन मजीद और इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों से साफ तरीके से सामने आता है, उसकी अनदेखी कर देना विरोधियों का एक बड़ा अत्याचार है। मुसलमानों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वह समझाने के प्रभावशाली साधन को अपनाते हुए उन लोगों के भ्रम को दूर करेन की कोशिश करें जो ऐसी व्याख्याओं से प्रभावित होकर भ्रम में पड़जाते हैं और इस्लाम और मुसलमानों के बारे में उन के विचारों को सही करें। इसके लिए संचार माध्यम और मिले जुले सिमिनार, सिम्पोज़ियम से काम लिया जा सकता है।

इसी के साथ मुसलमानों को अपनी ज़िन्दगियों को इन गुणों और विशेषताओं से सुसज्जित भी करना चाहिए जिनसे वह अल्लाह तआ़ला की मदद के पात्र बन सकें। काफ़िराना आदतें, जाहिलाना रस्में और बेज़रूरत नाम व दिखावे के शौक और मशहूर होने की इच्छा से बचते हुए उनको अच्छे आचरण और इस्लामी सदाचार व आचरण को इख़्तियार करना चाहिए और इसी के साथ दावती अंदाज़ भी इख़्तियार करना चाहिए क्यों कि इसी सूरत में अल्लाह रब्बुलआ़लमीन से उनको विशेष सहायता व मदद ह़ासिल होती है जिसकी वजह से पतन से सुरक्षित रहते हुए वह उन्नति और ग़लबा (प्रभुत्व) की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

अनुवाद – हबीबुल्ला आज़मी

THE FRAGRANCE OF EAST

अंग्रेजी त्रिमासिक "फ्रेग्रेंस आफ़ ईस्ट" का अगला अंक (अप्रैल–जून 2003) शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। कृपया स्वयं खरीदार बनें और अपने जानने वालों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

वार्षिक चन्दा केवल 100/– जो निम्न पते पर भेजें ।

The Manager,
"The Fragrance of East"
Nadwatul Ulama
Tagore Marg, Lucknow-2260007

(४ पृष्ठ का शेष)

में उन का प्रेम भी आवश्यक है। ऐसा प्रेम जिसका स्थान अल्लाह के प्रेम के बाद सब से अधिक हो। जो व्यक्ति ईमान लाता है उसके अन्दर सब से अधिक अल्लाह की महब्बत होती है फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की। उसके पश्चात वह जिस से भी प्रेम करता है अल्लाह के लिए करता है।

अल्लाह की महब्बत (प्रेम) में विशेष प्रेमियों पर कुछ ऐसे भेद खुलने लगते हैं कि उसके प्रेम में अधिकता होती चली जाती है यहां तक कि कभी प्रेमी आपे में नहीं रह पाता, और उसकी ज़बान पर अनलहक़्क़ (मैं ही खुदा हूं) लाइलाह (कोई पूज्य नहीं) सुबहानी मा अअ़ज़मशअ़्नी (मैं दोष रहित हूं मुझ से बढ़कर किसी का वैभव नहीं) जैसे वाक्य जारी हो जाते हैं। यह वह शब्द हैं जो ह़ज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शिक्षा के विरुद्ध हैं। लेकिन यह शब्द आपे से बाहर होकर मुंह से निकले हैं अतः अल्लाह के यहां इन पर पकड़ न होगी चाहे दुन्या में उनको शरीअ़त (इस्लामी विधान) ने क़त्ल का दण्ड दिया हो।

पस हम को चाहिए कि हम हर परमेश्वर भक्त (अल्लाह के वली) से प्रेम करें, उसकी शिक्षाओं को अपनाएं परन्तु यदि उनसे कोई ऐसा काम या ऐसा कथन प्रकट हो जो शरीअ़त की कसौटी पर न उतरे तो उसे हरगिज न मानें।

हम इस बात को भी मानें कि कभी कुछ अल्लाह के भक्तों से असाधारण (ख़र्क़े आ़दत) बातें प्रकट होती हैं जिनको करामत कहते हैं। अल्लाह तआ़ला हमको अपना, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अपने औलिया का प्रेम प्रदान करें।

वक़्त या तलवार

डाक्टर सईदुर्रहमान आज़मी

इस मिट जाने वाले संसार में इन्सान के लिए वक़्त एक ऐसी बहुमूल्य पूंजी है जो हाथ से निकल जाने के बाद किसी मूल्य पर भी वापस नहीं लाई जा सकती। संसार की दुर्लभ वस्तु के मिलने की आशा की जा सकती है और बड़े से बड़े हानि की पूर्ति हो सकती है परन्तु समय वक्त इन्सान की वह कुंजी है जो खो जाने पर फिर नहीं मिलती और उतने समय के जीवन का ताला सदैव के लिए बन्द हो जाता है। इसी कारण वक्त को इन्सान की महत्वपूर्ण तथा बहुमूल्य पूंजी बताया गया है और हर काल के इन्सानों ने इस की कद्र की है और इसकी सुरक्षा का भरपूर प्रबन्ध किया है।

आप अपने जीवन पर निगाह डालिये और व्यस्क होने के समय से अपने बीते समय को ध्यान में लाइये। जब से आपने अपने जीवन की यात्रा आरम्भ की है और दिनों फिर महीनों को गिनना शुरूअ़ कीजिए तो आप को अपने वक्त का हिसाब लगाने में कुछ भी कठिनाई न होगी और ऐसा लगेगा कि जो कुछ बीत गया है वह सब अभी कल ही की बात तो है। सांसारिक जीवन में जिस प्रकार यह अनुभव होता है कल क़ियामत में भी इसी प्रकार का अनुभव होगा। कुर्आन मजीद ने इस वास्तविकता का इस प्रकार उल्लेख किया है।

"और जिस दिन अल्लाह उनको एकत्र करेगा तो वह दुन्या के सम्बन्ध में ऐसा विचार करेंगे कि मानो वह वहां घड़ी भर देर से अधिक रहे ही न थे। (यूनुस : ४५)

परन्तु दुन्या के लोगों का कितना आश्चर्यजनक हाल है कि तक़दीरी घटनाएं उनको सचेत करती जा रही हैं लेकिन वह अचेत ही हैं। उनके जीवन का मूल्यवान समय विद्युत समान भाग रहा है लेकिन वह इस वास्तविकता से आंखें मूंदे हैं।

इस्लाम दया तथा कृपा का मत (दीन) है। वह जीवन को नियमित बनाता है। उसको सुखद बनाने के लिए वह ऐसे नियम बनाता है जो एक आदर्श समाज प्रस्तुत करे जिसका आधार उत्तम मानव आचरणों पर हो, परन्तु आदर्श समाज उसी समय स्थापित हो सकता है जब समाज का हर व्यक्ति अपने समय का मूल्य पहचानता और अपने क्षणों के महत्व को समझता हो। वह इस नियम से भली भांति परिचित हो कि "वक्त तलवार की भांति है अगर तुम उसे न काटोगे तो वह तुम को काट देगी"

इन्सान को चाहिए कि वह अपने वक्त की क़ीमत पहचाने और उससे काम ले। यह भी ईमान और तकवे (संयम) की एक पहचान है। ज़माना (समय) के उलट फेर और रात दिन के आने जाने से सीख (सबक़) लेना संयमीयों की नीति है। वह इससे सबक लेकर अपने मूल्यवान समय को उस काम में लगाते हैं जो आने वाले जीवन में उन का सहयोगी बन सके।

इस्लाम ने उपासनाओं (इबादात) में भी समय के महत्व का बड़ा ख़याल रखा है। पांचों समय की नमाज़ों में समय का महत्व कितना प्रत्यक्ष है कि निर्धारित समयों ही में नमाज़ अदा की जा सकती है । वर्ष में निश्चित मास ही में रोज़े (व्रत) रखे जाते हैं। ज़कात माल पर साल बीतने पर फ़र्ज़ होती है। जीवन में एक समय फ़र्ज़ होने वाले हज के लिए निश्चित मास की निश्चित तिथियों में निश्चित समयों पर उसके कार्य पूरे किये जाते हैं यह सब समय के महत्व पर प्रमाण है। इन बातों से प्रत्यक्ष है कि इस्लाम में समय का बड़ा सम्मान है।

जीवन को संगठित तथा स्वार्थिक बनाने में नियमित समय को बड़ा अधिकार है, इसी कारण एक मुसलमान के निकट हर कार्य का एक वक्त और हर काम का एक नियम तथा हर वक्त के लिए कोई कार्य आवश्यक है।

इन्सान अपने कर्तव्य को उसी समय भली भांति पूरा कर सकता है जब वह समय के महत्व को पूरी तरह ध्यान में रखता हो। वह समझता हो कि हर काम को उसको निश्चित समय पर पूरा करना सुखदायी जीवन प्राप्त करने और आदर्श समाज स्थापित करने में अत्यधिक सहायक है।

वक्त की क़ीमत समझने वाले और उसके महत्व का आभास रखने वाले हर काल में विशेष स्थान रखते रहे हैं भौतिक दृष्टि वालों में भी जिन्होंने समय के मूल्य को पहचाना वह दूसरों

के मुक़ाबले में आगे रहे हैं और जिन भौतिकवादियों ने भी समय को नियमित किया वह आगे बढ़ गये और सांसारिक उन्नति में भी उन के विपक्षी उन को न पा सके।

आज भी दुन्या की जिन कौमों ने वक्त की क़द्र की और कर रही हैं वह तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती जा रही हैं और ऐसे ऐसे उन्नति शील कार्य कर डाले हैं जो संसार को चकित कर देने के लिए प्रयाप्त हैं।

मुसलमान का हर क्षण उसके लिए खैर व बरकत का पैग़ाम तथा खुदायी पुरस्कार है यदि वह उससे लाभ उठाए और उसके मूल्य को समझे इस लिये कि बीता समय कभी वापस नहीं आ सकता न किसी प्रकार उस की पूर्ति हो सकती है।

हज़रत हसन् बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि हर दिन के आरंभ होते ही अल्लाह तआ़ला की ओर से एक पुकारने वाला पुकार पुकार कर कहता है कि ऐ आदम की सन्तान मैं एक नवीन सृष्टि हूं और तुम्हारे कर्मों पर साक्षी हूं अतः तुम को जो भले काम करने हों कर लो नहीं तो याद रखो मैं पुनः वापस नहीं आ सकता। पवित्र कुर्आन ने भी इस वास्तविकता की ओर पथ प्रदर्शन करते हुए कहा है :

"और वही तो है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया उस व्यक्ति के लिए जो नसीहत लेना चाहे या शुक्र करने वाला बनना चाहे।" (२५:६२)

क़ौमों की उन्नति जितना समय के नियमित करने में है किसी और चीज में नहीं । इतिहास में उच्च स्थान रखने वाले समय का मूल्य पहचान ही कर उस स्थान तक पहुंचे हैं तो आज इतिहास के पृष्ठों पर उनके नाम अंकित हैं।

आज भी और हर काल में, इतिहास का हीरो, कौमों का नायक और आदर्श व्यक्ति वही बन सकता है जो अपने वक्त का मूल्य पहचान कर उससे भली भांति लाभ उठा सके। इन्सान की उम्र (आयु) उस की महान पूंजी है। कियामत के दिन अल्लाह तआ़ला जिन चार बातों के विषय में इन्सान से प्रश्न करेगा उनमें सर्व प्रथम यही प्रश्न होगा कि उसने अपनी आयु किस कार्य में बिताई। ह़दीस शरीफ़ में आया है कि क़ियामत के दिन किसी बन्दे का क़दम उस समय तक अपनी जगह से हट नहीं सकता जब तक कि चार बातों के विषय में उससे उत्तर न ले लिया जाए। आयु (उम्र) के विषय में कि उसे किस काम में बिताया, जवानी के विषय में के उसे किस कार्य में लगाया, माल के विषय में कि उसे कहां से कमाया और कहां खर्च किया, इल्म (ज्ञान) के विषय में कि उसके अनुसार कहां तक जीवन बिताया।

वक़्त

बच्चों के लिए

वक़्त खुदा की निअ़मत है।
वक़्त खुदा की रह़मत है।।
दीन पे जो भी चलता है।
क़द्र वक़्त की करता है।।
कहें अंजानें वक़्त पर।
पढ़ें नमाज़ें वक़्त पर ।।
सेहरी छोड़ें वक़्त पर।
रोज़े खोलें वक्त पर ।।
ज़कात है देते वक़्त पर।
ह़ज हम करते वक़्त पर।।
समझ बूझ जो रखता है।
काम वक़्त पर करता है।।
वक़्त को जिसने खोया है।
आख़िर में वह रोया है।।
वक्त को जिस ने पहचाना।
ज्ञानी उसको सब ने जाना।।

Mohd. Aslam
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

अ़रबी मदरसों के बारे में कुछ सच्ची बातें

पहली क़िस्त

अब्दुल करीम पारीख

पिछले कई वर्षों से अरबी मदरसे वाद विवाद के घेरे में घिरे हुए हैं। आए दिन समाचार पत्रों में कुछ न कुछ उनके ख़िलाफ़ छपता रहता है कि यह आतंकवादियों के अड्डे हैं, और राजनीतिक पार्टियां जो मुसलमानों को तीखी नज़रों से देखती हैं वह भी इसको उछालती रहती हैं। मुसलमान इस का जवाब देते हैं तो यह समाचार पत्रों में शायद छपते न हों। अतः मैं यह खुलासा और मदरसों के सम्बन्ध में सच्ची बातें नेशनल प्रेस के सामने रखना चाहता हूं कि वह मेरी बात पर ग़ौर करें कि मदरसे से क्या हैं ? ख़ुद सरकार और हमारे देश वासी भाइयों में जिन को सन्देह हो वह भी ग़ौर करें।

मदरसों का इतिहास :

हिन्दुस्तान में मदरसों का इतिहास बड़ा लम्बा और बहुत पुराना है। वास्तव में मुग़ल काल में मुसलमानों की शिक्षा दीक्षा के केन्द्र नहीं थे, बहुत से मुसलमानों को नमाज़ पढ़ना भी नहीं आता था। इतिहास में ऐसा भी मिलता है कि कुछ लोग बग़दाद की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ते थे और आम लोगों को क़ुर्आन भी पढ़ना नहीं आता था। दीन और सत्य के प्रचारकों की दावत पर जो लोग इस्लाम क़ुबूल कर चुके थे, उनकी भी तरबियत (दीक्षा) मुस्लिम हुकूमत और समाज कर नहीं सका। मुग़ल बादशाहों को आपसी मतभेदों से ही फ़ुर्सत न थी। ऐसी परिस्थिति में ३०० वर्ष पूर्व अल्लाह तआ़ला ने एक व्यक्ति को पैदा किया जो शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी के नाम से मशहूर हुए। संसार के बड़े उलमा में उनकी गणना होती है, उन्होंने हुंदुस्तान में मुसलमानों की शिक्षा की समीक्षा की कि मुसलमानों की शिक्षा दीक्ष किस तरह हो?

उन्होंने पहला काम यह किया कि क़ुर्आन शरीफ़ का फ़ारसी में अनुवाद किया। यह अनुवाद क़ुर्आन मजीद का एक बुन्यादी अनुवाद है। फ़ारसी भाषा उस समय सरकारी भाषा थी। सरकारी हाकिमों के काम की यह चीज़ हुई। चुनानचः अपने अनुवाद के बारे में लिखते हैं "मैं ने फ़ारसी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद इसलिए लिखा कि सरकारी हाकिमों को अल्लाह के आदेश मालूम हों और शासन करने में उसका ख़्याल रखें जैसे मुसलमानों के अधिकार और ग़ैर मुस्लिमों के अधिकार, पड़ोसियों के अधिकार एवं और दूसरे धर्मों के लोगों के अधिकार क्या हैं ? उनके साथ नाइंसाफी न हो। इस प्रकार के मामलात में बादशाहों को कैसे फैसला करना चाहिए, कैसे रहना चाहिए और बादशाहों पर प्रजा के क्या अधिकार हैं? यह सब बातें उन्हें क़ुर्आन मजीद से मालूम हों।" इसके बाद उनके दो पुत्र अब्दुल क़ादिर मुहद्दिस देहलवी और हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस देहलवी ने क़ुर्आन मजीद का उर्दू में अनुवाद करके बड़ी ख़िदमत अंजाम दी।

कम्पनी बहादुर के अंग्रेजों ने भी क़ुर्आन के इस अनुवाद से लाभ उठाया।

स्वयं मुगलों के लशकर में हिन्दू, मुसलमान, ख़ान, पठान, राजपूत, गोण्ड अर्थात हर प्रकार के और हर धर्म के लोग शामिल थे। मुग़लों के शासन करने का ढंग ही अलग था जिसका दीने इस्लाम से कुछ अधिक लेना देना न था। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर मुहद्दिस देहलवी के क़ुर्आन के अनुवाद से कम्पनी बहादुर के अंग्रेज भी काफ़ी प्रभावित हुए और उन्होंने रोमन उर्दू में इसका अनुवाद तैयार कराया।

समाज के निर्माण और सुधार क़ुर्आन और हदीस की रोशनी में :

सबको जानना चाहिए कि जिस भाषा को हम मुसलमान आज "उर्दू" कहते हैं वह हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर साहब के जमाने में "हिन्दी" कही जाती थी जिस के द्वारा शाह अब्दुल क़ादिर साहब ने अवाम तक अल्लाह तआ़ला के आदेशों को पहचाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास किया।

हिन्दुस्तान में दीनी मदरसों का दौर : क़ुर्आन मजीद का अनुवाद लिखकर इन तीनों बाप बेटों ने क़ुर्आन और हदीस की शिक्षा मुसलमानों में प्रचलित करने की कोशिश की। इस में उन्होंने मुग़ल बादशाहों की भी कोई सहायता नहीं ली। मदरसा शब्द "दर्स" से निकला है और दर्स पठन पाठन को कहते हैं। इसके लिए दिल्ली में और इधर उधर छोटे छोटे मदरसे मुसलमान

आलिमों ने खोल लिए। किहीं पांच बच्चे, कहीं दस बच्चे आ रहे हैं। मस्जिदों के अन्दर भी मदरसे शुरू हो गए कि नमाज़ के बाद किसी को कोई बात पूछनी है कि रोज़ा कैसे रखा जाए? ज़कात किस पर फ़र्ज़ है? यह सब बातें मदरसों के उलमा बताते भी रहते थे। अब धीरे धीरे अरबी मदरसों की यह लाइन गांव में जगह जगह फैलने लगी। मदरसों के बारे में जो भ्रम फैलाया जा रहा है इस लेख में हम इस का खुलासा करेंगे कि इन मदरसों में कुर्आन, हदीस की शिक्षा के साथ साथ जो सबसे बड़ा काम हुआ कि मदरसे बेसहारा बच्चों के लिए सहारा बने। ऐसे बेसहारा और निर्धन लोगों के बच्चे जिन्हें उनके मां बाप पाल पासे नहीं सकते, उन्हें पढ़ा नहीं सकते, उनको कहीं और नौकरी या काम काज नहीं मिल सकता ऐसे बच्चों की संख्या तब भी अधिक थी और अब भी उनकी संख्या और अधिक ही है। जिनके पास पैसा है वह तो अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में भेजते हैं, वह अपने बच्चों को मदरसों में नहीं भेजते।

अरबी मदरसों ने उच्च कोटि के उलमा और स्वतंत्रता आन्दोलन के मार्ग दर्शक पैदा किये :

मदरसों में निचले वर्ग के बच्चों के आने के बावजूद उन्होंने बड़े–बड़े उलमा, बुद्धजीवी पैदा किये। मौलाना महमूदुल हसन साहब (रह०) हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी साहब (रह०), हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी (रह०), हजरत मौलाना हिफ़जुर्रहमान सेवहारवी, हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब (रह०) हज़रत मौलाना अतीकुर्रहमान उस्मानी साहब, हज़रत मौलाना सैयद मिन्नतुल्लाह रहमानी साहब (रह०) हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी (रह०) ऐसे कितने ही अनगिनत बड़े–बड़े उलमा जिन के नाम गिनाएं तो हजारों की सूची तैयार होगी। यह इस्लामी तालीम और कुर्आन और हदीस की शिक्षा का फैज़ था कि मदरसे से पढ़कर इतने बड़े बड़े लोग निकले। हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह०) मदरसे के आदमी नहीं थे। मगर मदससे के बाहर भी नहीं थे वह तो अरबी मदरसों के उलमा के भी मार्गदर्शक थे।

अंग्रेजों के ख़िलाफ़ मदरसों के उलमा ने कांग्रेस का साथ दिया:

अब यह कहना चाहूंगा कि यह एक आन्दोलन तो नहीं बना लेकिन जगह जगह उलमा बैठ गये । उसी ज़माने में थोड़ा आगे बढ़कर स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ, अंग्रेजों का दौर आया उन्हें हिन्दुस्तान से निकाला गया। उस में कांग्रेस का जो रोल रहा कांग्रेस के इस रोल में बड़ी भारी संख्या उन उलमा की थी जो मदरसे से पढ़कर निकले हुए थे और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस का साथ दिया। उन उलमा–ए–हक में देवबन्द, सहारनपुर, नदवा आदि के सभी उलमा थे। यह तो बड़े बड़े मदरसे हैं जिन को लोग जानते हैं। स्वतंत्रता संग्रा में भाग लेने वाले अधिकतर मदरसों के लोग थे। यह एक ऐतिहासिक सत्य है। यह एक ऐतिहासिक घटना है यू०पी० के जिला जौनपुर से लेकर बंगला देश के किनारे गांव तक ३० हज़ार आलिमों को अंग्रेजों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के जुर्म में फांसी पर चढ़ा दिया। यह सबके सब ६० प्रतिशत लोग मदरसे के लोग थे।

यहीं रहेंगे यहीं मरेंगे :

पाकिस्तान का जब आन्दोलन चला तो मुस्लिम उलमा ने जिनाह साहब का साथ नहीं दिया। केवल दो आलिमों का मैं नाम लेता हूं जो विभाजन के बाद पाकिस्तान गए या पहले से वह वहां होंगे एक तो हज़रत मौलाना मुफ़्ती इहतिशामुल हक़ थानवी (रह०) और दूसरे हज़रत मौलाना मुहम्मद मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब (रह०) बाक़ी उलमा देवबन्द, सहारनपुर आदि सब हज़रत मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब (रह०) के असर में थे और कोई भी पाकिस्तान गया नहीं। उन उलमा और मदरसे वालों की वजह से बड़ी संख्या में मुसलमानों ने यह फ़ैसला किया कि वह हिन्दुस्तान में रहेंगे, यही मरेंगे और इसी देश को अपना वतन बनाएंगे और अपने दीन व ईमान पर क़ाईम रहते हुए देश की सेवा भी जैसी बन पड़ेगी वह करेंगे।

मदरसे तालीम देते हैं, खाना खिलाते हैं, बे सहारा लड़कों से कुछ भी नहीं लेते :

हिन्दुस्तान के तालीमी हालत यह है कि छोटे बच्चों का के.जी. के अन्दर दाख़ला कराना हो तो स्कूल के ज़िम्मेदार डेढ़ लाख रूपया डोनेशन के लिए आज भी मांगते हैं। अब मैं पूछना चाहता हूं कि के.जी. में दाख़ले के लिए इतनी बड़ी रक़म ख़र्च करनी पड़ती है तो माध्यम वर्ग और ग़रीब? लोग अपने बच्चों को किस तरह तालीम दिलाएंगे?

अब रही मदरसों की बात तो वह बच्चे के मां बाप से पांच पैसे भी दाखले के नहीं लेते और जैसे मदसे में कोई आदमी गया और कहा कि साहब मज़दूर आदमी हूं, मेरी स्त्री का देहान्त हो चुका है। मौलाना ! मेरे बच्चों को संभाल लो, मैं अपने पास रख नहीं सकता तो मदरसे वाले उसे रख लेते हैं, तीन वक़्त बच्चे को खाना खिलाते हैं, कपड़े भी देते हैं, दवा इलाज का भी खर्च बर्दाश्त करते हैं। उसको पढ़ना लिखना सिखाते हैं क़ुर्आन व हदीस की शिक्षा देते हैं, नमाज़ के नियम, और जीवन के अन्य चीजों के नियम भी सिखाते हैं, क़ुर्आन मजीद का हिफ़्ज़ (कंठस्थ) भी कराते हैं। मदरसे ही का आदमी पास पड़ोस के बच्चों को मस्जिद में इकट्ठा करके क़ुर्आन मजीद और दीनी नियमों की तालीम देते हैं।

मदरसे वालों की एक भूल : वैसे मुसलमानों और मदरसे वालों ने भी एक ग़ल्ती की कि हमारे हिन्दू भाइयों को जो पढ़े लिखे और समझदार लोग थे, मस्जिद और मदरसे में बुलाते रहते और उनसे सम्पर्क रखते तो शायद आज जो सूरत है वह पैदा न होती और जो भ्रम हो गया है वह भी नहीं होता। कोई जलसा हो, बच्चों की परीक्षा हो या विद्यार्थियों को पुरस्कार दिया जा रहा हो, ऐसे अवसरों पर पास पड़ोस के समझदार और पढ़े लिखे ग़ैर मुस्लिम भाइयों को बुला लेना चाहिए कि वह भी आएं और देखें कि मदरसा क्या है और उसमें क्या हो रहा है? मदरसे के द्वारा ग़रीब अनाथ बच्चों की शिक्षा दीक्षा, पढ़ाई लिखाई का प्रबन्ध करना यह हिन्दुस्तान में हज़रत शाहवली अल्लाह साहब की लाइन और तरतीब है। तालीम के साथ ख़ाने पीने और कपड़ों, दवा इलाज का खर्च भी मदरसा बर्दाश्त करता है और यह मदरसे, रूपया, अठन्नी के मुसलमानों के चन्दे से चलते हैं। मुसलमान बादशाहों से भी हमारे उलमा ने मदरसे के लिए पैसे और सरकारी सहायता नहीं ली।

मौलाना अली मियां का एक भाषण और यू०पी के भूतपूर्व मुख्यमंत्री बहुगुना साहब : १९८० ई० के आस पास की बात है हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी साहब (रह०) ने नदवतुल उलमा, लखनऊ में एक अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस बुलाई। उसमें अरब देशों और अरब राज्यों के प्रतिनिधि भी आए थे। उन्होंने बड़े बड़े चेक मौलाना अलीमियां साहब (रह०) को दिये लेकिन मौलाना अली मियां ने शुक्रिये के साथ वह चेक उन्हें लौटा दिये और कहा तुम्हारे पास सोने की चिड़िया है, वह हमें नहीं चाहिए। यह सोने की चिड़िया किसी दिन उड़ जाएगी। हम आम मुसलमानों से चार आने, आठ आने, रूपया , दो रूपया के चन्दे से इंशा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) अपने मदरसे चला लेंगे। हम तो इस जलसे से यह बताना चाहते हैं कि मदरसे की तालीम यह है और यह इसकी ज़िन्दगी है। इसी तालीम से मिस्र की "अलअज़हर यूनिवर्सिटी" का सम्बन्ध रहा। सऊद अरब की बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटी का सम्बन्ध रहा। हमारे लड़के वहां जाकर पढ़ते और वहां के लड़के यहां आकर शिक्षा ग्रहण करते हैं। आज कितने ही मदरसे ऐसे हैं जहां इण्डोनेशिया के, जावा के सुमात्रा के बल्कि अरब देशों के भी लड़के पढ़ने के लिए आते हैं। यह हिन्दुस्तान की शान है या इस की बेइज़्ज़ती? यह मौलाना अलीमियां (रह०) के शब्द हैं। इस जलसे में यू०पी० के मुख्यमंत्री हेमवती नन्दन बहुगुना साहब भी मौजूद थे।

गंगा प्रसाद के लिए सीट खाली छोड़ी :– फिर यह देखिये कि मदरसे में बाज विद्यार्थी होशियार लड़के होते हैं जो अरबी भाषा में विशेष योग्यता प्राप्त करते हैं, अरबी टाइपिंग और कमप्यूटर सीख लिया । किसी प्रकार दिल्ली पहुंच गए, दिल्ली में अरब देशों के पचास दूतावास हैं जहां उन्हें नौकरी मिल जाती है। दूतावास वाले बाहर भेज देते हैं और इस प्रकार उन्हें हजारों रूपये की नौकरी मिल जाती है और वह अपने देश को फारेन करेंसी भी भेजता है साथ ही वह यहां हिन्दुस्तान में अपने वतनी भाई गंगा प्रसाद के लिए खाली सीट भी छोड़ जाता है। तो अब मुझे कोई बताए कि इस मदसे के लड़के ने अपने वतन हिन्दुस्तान को लाभ पहुंचाया या हानि पहुंचाई। यह बात सोचने की है। (जारी)

अनुवाद–हबीबुल्लाह आज़मी

(पृष्ठ १८ का शेष)

पीड़ितों का किला भयभीत लोगों की शरण स्थली और जालिमों के लिए खिंची हुई तलवार है। न्याय की अपराधियों पर पाबन्दी लगाता है और समाज को बर्बरता व दमन से मुक्त कराता है। इन नियमों व आदेशों की व्यवहारिक रूप हमें इस्लामी न्याय नीति और मुस्लिम न्यायालयों में मुख्य रूप से नजर आती है।

ख़लीफ़ाओं की न्यायप्रियता

डा० मु० इज्तिबा नदवी

मुस्लिम खलीफाओं ने इस्लाम के न्याय के दृष्टिकोण को पूरी तरह व्यावहारिक रूप दिया और अपनी करनी व कथनी में इसका पूरा–पूरा ध्यान रखा। वे किसी भी परिस्थिति में और किसी समय विचलित नहीं हुए। इसके कुछ नमूने आप पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं। आइए कुछ और नमूने देखते हैं :

हज़रत उमर फारूक रज़ि० की खिलाफत का जमाना है। विजयों का सिलसिला बढ़ता ही जा रहा है। राज्य के विस्तार और क्षेत्रफल में वृद्धि के साथ शहरों, गांवों और नई आबादियों के प्रशासन व प्रबन्ध का भी काम चल रहा है। खलीफाओं के न्याय से लोग पूरी तरह संतुष्ट हैं। उन्होंने फारस व रूम की पिछली सरकारों के अन्याय व अत्याचार के बाद इस्लाम की छत्र छाया में शान्ति और सुख चैन, न्याय और समानता के दृश्य देखे तो दिल व जान से इस नए दीन और आधुनिक व्यवस्था को अपनाना शुरू कर दिया। यदि उन्हें जरा भी अन्याय या अत्याचार नजर आया तो खलीफा के दरबार तक अपनी समस्या पहुंचा कर या उपस्थित हो कर न्याय मांगा और जुल्म का तोड़किया। आइए इस प्रकार की एक घटना को देखें।

मिस्र के विजेता और महान सेनापति हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के गवर्नर हैं। उनके बेटे मुहम्मद बिन अम्र बिन आस एक क़िब्ती नागरिक से घुड़सवारी का मुकाबला करते हैं। मुकाबले में क़िब्ती का घोड़ा आगे बढ़ जाता है। गवर्नर का बेटा उत्तेजित होकर क़िब्ती को सम्बोधित करके कहता है कि सभ्य व सम्मानित व्यक्ति के बेटे से तू आगे बढ़ जाने का साहस करता है और फिर कोड़ों से उसकी पिटाई करता है। हज़रत अम्र बिनआस को अपने बेटे की इस हरकत का पता लगता है तो उनको खतरा महसूस होता है कि कहीं क़िब्ती अमीरूल मोमिनीन से शिकायत न कर दे, अतः वे उसे कैद कर देते हैं।

क़िब्ती एक लम्बे समय के बाद किसी तरह छूट कर अमीरूल मोमिनीन की सेवा में उपस्थित होता है और उनसे इस अत्याचार के विरूद्ध फरियाद करता है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० रिवायत करते हैं कि अमीरूल मोमिनीन ने केवल इतना कहा: अच्छा बैठ जाओ। थोड़ी देर के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० और उनके बेटे मुहम्मद को बुलाया जाता है और दोनों सज़ा के लिए खड़े कर दिए जाते हैं। हज़रत उमर रज़ि० आवाज़ देते हैं कि मिस्री कहां है? वह आता है तो उससे कहते हैं यह कोड़ा लो और शरीफ व्यक्ति के बेटे से बदला ले लो। क़िब्ती ने मुहम्मद को इतना मारा कि उसका शरीर खून में डूब गया।

हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि हम चाहते हैं कि मुहम्मद को मारा जाए। उसने उस समय हाथ रोका, जब हमने भी चाहा कि अब मारना बन्द कर दिया जाए। हज़रत उमर रजि० कह रहे थे कि साहबजादे को कोड़े लगाओ फिर फरमाया : ऐ मिस्री ! अपना कोड़ा अम्र बिन आस की चुन्दया पर भी घुमाओ, क्योंकि इन्हीं की गवर्नरी व सत्ता के बल पर उसने तुम्हें मारा था।'

हज़रत अम्र बिन आस भय भीत होकर कहते हैं अमीरूल मोमिनीन बदला तो पूरा हो गया। मिस्री भी कहने लगा कि अमीरूल मोमिनीन हमने तो मारने वाले से बदला ले लिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा खुदा की कसम यदि तुम इनको मारते तो हम उस समय तक मना न करते जब तक कि तुम स्वयं कोड़ा न रोक लेते। इसके बाद अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० गवर्नर मिस्र को सम्बोधित करते हुए जो कुछ कहा वह उससे पूर्व किसी शासक की ज़बान से नहीं कहा गया। यह एक एतिहासिक वाक्य है :

'ऐ अम्र ! तुमने लोगों को कब से गुलाम बना लिया है, यद्यपि उनकी माओं ने उनको आज़ाद पैदा किया है।'

यह एक एतिहासिक वाक्य ही नहीं बल्कि मानव अधिकार के इतिहास का चार्टर है जिसकी अमीरूल मोमिनीन उमर बिन खत्ताब रज़ि० ने चौदह सौ साल पहले मदीना में घोषणा कर दी

थी।

बनू उमय्या की खिलाफत का जमाना है। खलीफा सुलेमान बिन अब्दुल मलिक का देहान्त हो चुका है। क़ाजी रिजा बिन हैवत खलीफा को दफन करने के बाद हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज रहम० की खिलाफत की घोषणा करते हैं। हर व्यक्ति खुशी से झूम उठता है। न्याय का दौर फिर वापस आ जाता है। सुलेमान बिन अब्दुल मलिक के जनाज़े और खिलाफत के लिए बैअत के बाद उमर बिन अब्दुल अज़ीज जुहर से पहले घर पहुंचते हैं और थोड़ी देर आराम के लिए जगह तलाश करते हैं। इतने में उनके बेटे अब्दुल मलिक आगे बढ़ कर मालूम करते हैं: अमीरूल मोमिनीन क्या इरादा है। कहते हें कि रात में जागने और तुम्हारे चचा सुलेमान के कफन दफन में व्यस्त रहने के कारण थक गया हूं, थोड़ी देर लेटना चाहता हूं। बेटे ने कहा तो क्या आप आराम करेंगे और फरयादियों की फरियाद न सुनेंगे, उनकी समस्याएं हल न करेंगे? ख़लीफ़ा ने कहा हां, जुहर की नमाज के बाद उनको सुनने और न्याय करने बैठूंगा। बेटे अब्दुल मलिक ने कहा : अब्बा जान ! जुहर की नमाज़ तक ज़िन्दा रहने की जमानत कौन दे सकता है? ख़लीफ़ा उमर रहम् ने फ़रमाया मेरे बेटे मेरे पास आओं जब व पास आए तो उनको सीने से लगा लिया और दोनों आंखों के बीच बोसा दिया और कहा शुक्र है उस खुदा का जिसने मुझको ऐसा बेटा दिया, जोदीन के मामलो में मेरा सहायक है। इसके बाद घर से निकले और आवाज़ दिलवाई कि यदि किसी का कोई मामला हो तो पेश करे।

यह आवाज़ सुनकर वहां का एक ज़िम्मी (इस्लामी राज्य का ग़ैर मुस्लिम नागरिक, जिसकी हर प्रकार की रक्षा की जिम्मेदारी राज्य की होती है) जिसके सर और दाढ़ी के बाल बिल्कुल सफेद थे, आगे बढ़ा और कहा : 'ऐ अमीरूल मोमिनीन ! मैं आप से कुरआन पाक के द्वारा न्याय का इच्छुक हूं।' पूछा क्या बात है? उसने कहा कि अब्बास बिन वलीद बिन अब्दुल मलिक ने मेरी ज़मीन पर ज़बरदस्ती क़ब्जा कर लिया है। अब्बास वहां मौजूद थे। खलीफा ने अब्बास से पूछा तुम्हारा क्या जवाब है?

उसने कहा मुझे वह ज़मीन वलीद बिन अब्दुल मलिक ने दी थी उसने एक काग़ज़ भी लिख कर दिया था। आपने जिम्मी को सम्बोधित करके कहाः अब तुम क्या कहते हो? उसने कहा मैं तो ऐ अमीरूल मोमिनीन अल्लाह की किताब से न्याय चाहता हूं। खलीफा ने कहा वलीद के लिखे हुए काग़ज़ के मुकाबले में अल्लाह की किताब का अनुसरण अधिक जरूरी है। ऐ अब्बास! इसकी जमीन वापस कर दो। अब्बास ने जमीन वापस कर दी।

इस तरह एक एक करके सारे अवैध कब्जों और चीजों को अपने रिश्तेदारों और बनू उमय्या के शहज़ादों से वापस उनके मालिकों को दिलवा दिया और केवल वे चीज़ें बाक़ी रहने दीं जिनके वे सही तौर पर हक़दार थे। न्याय प्रियता और अधिकारोंकी प्राप्ति के लिए हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने बड़े साहसी कदम उठाए और हुकूमत बनू उमय्या को खिलाफते राशिदा की डगर पर ला खड़ा किया। पूरे मुस्लिम जगत में न्याय, शान्ति और प्रेम व सहयोग की लहर दौड़ गयी।

हज़रत मालिक बिन दीनार का बयान है कि जब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ खलीफा चुने गए तो पहाड़ों की चोटियों पर बकरियों के चरवाहे ने कहा कि किसी नेक व सही व्यक्ति के हाथ में देश की बाग डोर आ गयी है। उससे लोगों ने पूछा : तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ? उसने जवाब दिया कि जब कोई नेक खलीफा चुना जाता है तो शेर और भेड़िए हमारी बकरियों पर हमला करना बन्द कर देते हैं।

मुसलमानों की न्याय प्रियता

मुसलमानों ने हर दौर और हर जमाने में न्याय स्थापित करने की पूरी व्यवस्था की मुस्लिम शासकों ने भी काज़ी व जज के चयन में इस्लामी आदेशों व मूल्यों का ध्यान रखा। उनसे बहुत कम गलतियां व भूल हुईं। काज़ी के पद पर काम करने वालों ने नबी सल्ल० की इस हदीस को हमेशा अपने सामने रखा। नबी सल्ल० ने फरमाया : 'काज़ी तीन तरह के हैं, इनमें से दो तहर के तो नरक में जाएंगे और एक तरह के काज़ी जन्नत के हकदार ठहरेंगे। एक आदमी को हक बात मालूम हो गयी, फिर भी उसने इसके विरूद्ध निर्णय दिया तो वह नरक में जाएगा और एक आदमी वह जिसने हक बात मालूम की और उसके अनुसार निर्णय किया तो वह जन्नत में दाखिल होगा।

मुसलमान काज़ियों ने सदैव यह बात अपने समक्ष रखी कि सही निर्णय द्वारा अल्लाह तआला हक को स्थापित करता है और अन्याय को समाप्त कर देता है। वह हकदार को उसका हक दिलाता है। न्याय पर आधारित निर्णय

(शेष पृष्ठ १६ पर)

इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम

आमिना उसमानी

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के काल की एक घटना

हज़रत कुतैब बिन मुस्लिम का विजेता लश्कर ईरान व खुरासान को विजय करता हुआ तुर्किस्तान में दाखिल हो रहा था और उसके प्रसिद्ध व शक्तिशाली शहर बुखारा व समरकन्द की ओर बढ़ रहा है। कुछ क्षणों में दोनों शहर हथियार डाल देते हैं और मुसलमान इन शहरों पर अधिकार कर लेते हैं और आदेश पारित करते हैं।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का कार्यकाल है। दुनिया के एक बड़े हिस्से में उनकी विजय की ख्याति फैल चुकी है। रात को खामोशी में समरकन्द के लोग जो गैर मुस्लिम थे उनका एक चुनिंदा प्रतिनिधि मंडल खलीफा के दरबार में शिकायत के लिए दमिश्क के लिए चल देता है।

खलीफा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से प्रतिनिधि मंडल का मुखिया कहता है कि "मुसलमानों के लश्कर के सरदार कुतैब बिन मुस्लिम उनके शहर में बलपूर्वक दाखिल हुए। उन्होंने मुसलमानों को आबाद करना शुरू कर दिया है। उन्होंने इस्लामी नियमानुसार इस्लाम की दावत या जिज़्या की अदाएगी व इंकार की स्थिति में युद्ध की घोषणा नहीं की थी।'

यह सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ वहां के गवर्नर को एक छोटे से कागज़ के टुकड़े पर लिखते हैं "मुझे खबर दी गयी कि समरकन्द की विजय में इस्लामी नियमों का उल्लंघन किया गया है। इस मामले की जांच के लिए काज़ी की नियुक्ति करें। यदि वह मुसलमानों को समरकन्द से निकल जाने का निर्णय करता है तो मुसलमान समरकन्द से बाहर निकल जायें।

गवर्नर ने जमीअ बिन हाज़िर अलबाजी को काजी नियुक्त किया। उन्होंने सारे मामले की जांच की और निर्णय दिया (काजी मुसलमान था) कि मुसलमानों को समरकन्द से निकल जाने का आदेश दिया जाए और इसके बाद मुसलमान समरकन्द के सामने इस्लाम के तीनों उसूल प्रस्तुत करें। न मानने की स्थिति में युद्ध की घोषणा करें। समरकन्द के लोग यह निर्णय सुनकर चकित रह गए । उन्होंने समरकन्द के इतिहास में ऐसा निर्णय कभी न सुना था न देखा था और न ऐसे न्यायप्रिय गवर्नर व सेना और काज़ी से उनका वास्ता पड़ा था। उन्होंने एक जुबान होकर कहा कि "इस जैसी क़ौम से युद्ध नहीं किया जा सकता और इनकी हुकूमत में रहना तथा इनके शासन को अपना शासन मानना गर्व और प्रसन्नता की बात है। मुसलमानों के इस नैतिक व उच्च आचरण व न्याय पर आधारित निर्णय से प्रभावित होकर गैर मस्लिमों की एक बड़ी संख्या ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

गैर मुस्लिमों के साथ नैतिकता का उदाहरण जो इतिहास में नहीं मिलेगा

इस्लामी सेना ने दमिश्क, ह्रिस और शाम के अन्य शहरों पर विजय प्राप्त की। वहां की ईसाई आबादी से अपने समर्थन व उनकी सुरक्षा के बदले कुछ माल और धन लिया (जिसे इस्लाम में जिज़्या कहते हैं) कुछ दिनों बाद मुसलमानों के सालारों को खबर मिली कि यमन का शासक हिरक्ल उनके विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध के लिए सेना जमा कर रहा है तो इन लोगों ने भी आपसी विचार विमर्श करके यह तय किया कि सब मिलकर रूमी सेना का मुकाबला करें । इसके लिए उनके विजय शहरों को खाली करना पड़ेगा। अतएव दमिश्क और हम्स और अन्य शहरों से इस्लामी सेना को निकालना तय हुआ।

हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि० ने हम्स के लोगों और हजरत अबू उबैदह रज़ि० ने दमिश्क के निवासियों को और उनके विशिष्ट लोगों को जमा किया और कहा कि "हमने आपकी हिमायत व सुरक्षा के लिए कुछ माल व धन राशि ली थी। हम इस समय यहां से जा रहे हैं और आपकी सुरक्षा नहीं कर सकते इसलिए हमने आप लोों से जो धन लिया था वह आपको वापस कर रहे हैं।"

सारे लोगों ने एक जुबान होकर कहा "अल्लाह आप लोगों को दोबारा वापस लाए और विजयी करे। खुदा की क़सम आपकी हुकूमत और आप लोगों का न्याय रूमियों के अत्याचार व

अन्याय की तुलना में हमें अधिक प्रिय है। खुदा की कसम वे अत्याचारी आदि आपकी जगह पर होते, तो एक पैसा भी वापस न करते बल्कि जो जितना माल अपने साथ ले जा सकता अपने साथ ले जाता। यह शराफत और ईमानदारी का एक ऐसा उदाहरण है जो दुनिया के इतिहास में मिलना मुश्किल है।

एक मुस्लिम विद्वान की न्यायपूर्ण सोच

तातारी दुनियां के लिए प्रकोप व मुसीबत बनकर आये। कितने ही देशों को तबाह व बर्बाद करते हुए लोगों की हत्याएं करते हुए शाम में दाखिल हुए और मुसलमानों के साथ ईसाइयों व यहूदियों को भी कैद कर लिया। इस दौर के सबसे विद्वान शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह० तातारियों के शासक के पास उन कैदियों की रिहाई के बारे में बात करने के लिए गए। उसने मिलने से पहले तो इंकार कर दिया फिर मुसलमानों को छोड़ देने की इच्छा प्रकट की और ईसाइयों और यहूदियों को छोड़ने से इनकार कर दिया और कहा कि उनसे आपका क्या सम्बन्ध? आप तो केवल मुसलमानों के जिम्मेदार हैं केवल उनके बारे में ही बात कीजिए मैं उनको छोड़े देता हूं।

शैखुल इस्लाम ने कहा – "अब वे भी हमारे शहर के नागरिक हैं और हमारे कैदियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी है इसलिए तुम्हें उनको भी छोड़ना होगा। हम सारे कैदियों की रिहाई चाहते हैं चाहे वे मुसलमान हों या यहूदी हों या ईसाई हों।'

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया वहां से उस समय तक वापस न हुए जबतक मुसलमानों के साथ–साथ ईसाई व यहूदियों को भी रिहा कराकर अपने साथ वापस न ले आए। तातारी सरदार चकित हो रहा था कि गैर मज़हब वालों के साथ मुसलमानों का इतना बड़ा धार्मिक विद्वान किस प्रकार दया व सहानुभूति और सद्व्यवहार कर रहा है। मुसलमानों ने अपने इतिहास में दूसरी कौमों के साथ इसी उदारता व सद्व्यवहार का प्रदर्शन किया है और जंगी कैदियों के साथ जंग के मैदान में क्षमा कर देने की ऐसी मिसालें पेश की हैं, दया व हमदर्दी के ऐसे नमूने छोड़े हैं कि इतिहास इस बात पर आश्चर्य कर रहा है।

इस्लामी अदालत का नमूना

इब्ने बतूता ने अपने सफरनामे में लिखा है कि सुल्तान मुहम्मद तुगलक के विरुद्ध एक हिन्दू अमीर ने दावा किया कि सुल्तान ने उसके भाई की अकारण हत्या कर दी है। क़ाज़ी ने बादशाह को अपनी अदालत में बुलाया। वह एक आम व्यक्ति की भांति क़ाजी की अदालत में हाज़िर हो गया, (स्पष्ट रहे कि बादशाह ने क़ाज़ी को यह सूचना भेज दी थी कि अदालत में आ रहा है अतः उसका किसी प्रकार का सम्मान न किया जाए बल्कि एक साधारण व्यक्ति की तरह उसके साथ व्यवहार किया जाए।)

बादशाह काजी के समक्ष एक सामान्य अपराधी के रूप में खड़ा हुआ। काज़ी ने आदेश दिया कि बादहशाह दावा करने वाले को राजी करे अर्थात उसे क्षमा कर देने के लिए त्यार करे वरन् किसास (इस्लामी कानून के अन्तर्गत क़त्ल का बदला क़त्ल लागू होगा बादशाह ने दावा करने वाले को राजी कर लिया (अर्थात् खून का बदला दे दिया) तब कहीं जाकर बादशाह को मुक्त किया गया। (सफरनामा इब्ने बतूता)

हिन्दुस्तान और मुसलमान शासक

यहां हम अपने देश से सम्बन्धित कुछ विस्तार के साथ लिखना चाहते हैं क्योंकि लगभग एक हजार साल तक शासक के रूप में मुसलमानों का इस देश से सम्बन्ध रहा है। यहां की सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में उनका भी रक्त मौजूद है और इतिहास के पन्नों पर उनके उज्जवल कारनामें अंकित हैं और कितने ही स्थानों पर उनके महान एवं विशाल भवनों के चिन्ह आज भी आंखों को हैरान कर देते हैं।

इतिहास वस्तुतः मानवता की कहानी है जिसके द्वारा मिलीजुली शक्ल में व्यक्तियों, राष्ट्रों और संगठनों के कारनामे हमारे सामने आते हैं यह प्रसन्नता की बात है कि हिन्दुस्तान की क्रांति का इतिहास जमाने के थपेड़ों से अभी तक सुरक्षित है और हम इसके अन्दर उन मुसलमान शासकों की उदारता व भले कामों का अवलोकन कर सकते हैं जो कई सौ साल तक हिन्दुस्तान पर शासन करते रहे हैं।

उनका अध्ययन करते समय हमें यह न भूलना चाहिए कि हिन्दुस्तान के मुस्लिम शासक इस्लाम के पूरी तरह नमूने न थे न उनकी हुकूमत इस्लामी हुकूमत थी फिर भी उन्होंने जो अच्छे काम किए उन पर इस्लाम ही की छाप मौजूद थी और जो विशेषताएं उन मुस्लिम शासकों में थीं वे दुनिया के दूसरे बादशाहों में मिलना मुश्किल हैं। जिस विनम्रता, उच्च आचरण और उदार

दृश्य का सबूत अपने व्यवहार में उन मुस्लिम शासकों ने दिया और उसका थोड़ा सा अंश भी दुनिया की कोई दूसरी कौम पेश नहीं कर सकती।

लेकिन जैसा कि हम मानते हैं कि ये लोग इस्लाम का मुकम्मल नमूना न थे इसलिए एक हजार साल की लम्बी अवधी में इनसे गलतियां भी हुई हमारा काम उनकी गलतियों पर पर्दा डालना नहीं है बल्कि दिखाना यह है कि इस्लाम ने अपने अनुयायियों की जो सोच बनायी थी कि सारे लोग ईश्वर का परिवार हैं, दीन में जोर जबरदस्ती नहीं है, इस पर हिन्दुस्तान में मुस्लिम शासकों ने कहां तक अमल किया और अपनी ग़ैर मुस्लिम जनता के साथ उनका व्यवहार कैसा रहा।

मुहम्मद बिन क़ासिम

वैसे तो मुसलमान व्यापार के सिलसिले में बहुत पहले से हिन्दुस्तान आ जा रहे थे परन्तु ऐतिहासिक रूप से उनके आगमन का क्रम मुहम्मद बिन कासिम के हमले से आरम्भ हो जाता है। कहा जाता है कि अरबों के कुछ जहाज अरब सागर से गुजर रहे थे कि सिन्ध के लोगों ने उनको लूट लिया। राजा दाहिर से जो उस समय सिन्ध का शासक था इस नुक्सान की क्षतिपूर्ति के लिए कहा गया लेकिन उसने इस पर कोई ध्यान न दिया जिसके कारण इस्लामी राज्य के लिए जवाबी कार्रवाही अत्यन्त जरूरी हो गयी।

अतएव ७१२ ई० में मुहम्मद बिन कासिम को जो उस समय नव उम्र थे सिन्ध के अभियान पर भेजा गया। दाहिर की सेना ने बड़े साहस के साथ मुकाबला किया परन्तु विजय मुसलमानों की हुई। इतिहास इस बात का साक्षी भी है कि यह विजय केवल देश व धरती की विजय न थी बल्कि सिन्ध के वासियों के दिल भी पराजित हो गए। मुहम्मद बिन कासिम कम उम्र होने के बावजूद बड़ी सूझ बूझ उच्च आचरण वाला एक नेक आदमी था उसने अपनी उदारता, दानवीरता और अच्छे व्यवहार से थोड़े ही समय में सिन्धियों के दिलों को मोहित कर लिया और उनके साथ इतना अच्छा व्यवहार किया कि ग़ैर मुस्लिम जनता उसकी महब्बत के गुन गाने लगी यद्यपि उस समय वहां मूर्ति पूजा का जोर था। वे लोग अरब मल्लाहों को पकड़कर बुरे आचरण व दुर्व्यवहार का सबूत दे चुके थे।

मुहम्मद बिन कासिम के उदार हृदय का प्रमाण

मुहम्मद बिन कासिम इन बातों को भुलाकर उनके साथ अत्यन्त उदार हृदय के साथ मिला यहां तक कि ब्राहमणों को बुलवाकर बुतखानों से सम्बन्धित हर प्रकार का पद व पुरस्कार उनको प्रदान किया। इस सम्बन्ध में इतिहासकार अली बिन हामिद तारीख़ें सिन्ध में लिखते हैं –

"उसने बहुत से गुलामों और ब्राहमणों धार्मिक गुरूओं को आदेश दिया कि अपने भगवान की पूजा करें और इन बुतों की देख भाल करने वालों के साथ अच्छा व्यवहार करें और अपनी पूजा की तमाम रस्मों को अपने पूर्व तरीकों पर ही करें और जो राशि आज से पूर्व ब्राहमणों को दी जाती थी वही आज भी दी जाएगी।

ब्राहमणों का एक प्रतिनिधि मंडल उसकी सेवा में प्रस्तुत हुआ और यह अनुरोध किया कि हिन्दू रीतिरिवाज के अनुसार हमारा राष्ट्रीय स्तर दूसरी जाति वालों से ऊंचा रखा जाए। उनकी यह मांग स्वीकार कर ली गयी। इसके अतिरिक्त उसने धार्मिक स्वतंत्रता से सम्बन्धित अपनी नीति की घोषणा इन शब्दों में की –

"हमारे राज्य में हर व्यक्ति धार्मिक मामलों में स्वतंत्र होगा। जो व्यक्ति चाहे इस्लाम स्वीकार करे और जो चाहे अपने धर्म पर चलता रहे हमारी ओर से किसी प्रकार की आपत्ति न होगी।" (तारीखे सिन्ध)

मुहम्मद बिन कासिम यहां केवल साढ़े तीन साल ही ठहरा मगर अपने शासनकाल में गैर मुस्लिमों को वह सम्मान दिया जिसका उदाहरण किसी धर्म में नहीं मिलता। उसने जहां मस्जिदों का निर्माण कराया। वहां मन्दिरों के निर्माण को भी नहीं रोका, बल्कि हुकूमत मन्दिरों के निर्माण को अपना कर्तव्य समझती थी। उसके दौर में ब्राहमण आबाद, मुल्तान, अलवर और अन्य स्थानों मन्दिरों की इस्लामी कोष से मरम्मत करायी गयी। मन्दिरों की जागीरें उसने ज्यों की त्यों रहने दीं। ब्राहमणों व पुजारियों के लिए वित्त अनुदान भी बराबर बनाए रखे। हिन्दुओं और बौद्धों के साथ उदारता व भाईचारे का व्यवहार रखा। उनको हुकूमत में हिस्सा दिया बल्कि बड़े बड़े पदों पर गैर मुस्लिम ही मौजूद थे जैसे काका, मोका, सी सागर और काकेशा आदि ("हिन्दुस्तान में इस्लाम" अब्दुल बारी एम०ए)

एक हिन्दू विद्वान की गवाही

मुहम्मद बिन कासिम के इस अच्छे व्यवहार की स्वयं गैर मुस्लिम भी गवाही देते हैं अतएव श्री चूनी लाल आनन्द अपनी किताब "पैगामे सुल्ह" पृष्ठ ३ पर मुहम्मद बिन कासिम की

उदारता का उल्लेख करते हुए लिखते हैं –

"वह (मुहम्मद बिन कासिम) सिन्ध का विजेता हिन्दुओं की सामाजिक और धार्मिक रीति रिवाजों अथवा विश्वासों का सम्मान करता था। यद्यपि उसने मुहम्मद सल्ल० के कानूनों के अनुसार उन पर जिज़्या (सुरक्षा कर) लगा दिया था परन्तु हिन्दुओं को कानून की वैसी ही शरण प्राप्त थी जैसी कि मुसलमानों को प्राप्त थी। उनके सामाजिक व धार्मिक संस्थानों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता था। वे अपने बुतों की उपासना करते थे और उनकी इच्छा पर इनकी जात पात तौर तरीकों को भी कानून का रूप दे दिया गया था। कासिम बुतों को तोड़ने वाला न था न ही उसके बाद आने वालों में कोई था। उसने तो राज्य के विस्तार के साथ–साथ हिन्दुओं के लिए भी सरकारी कार्यालय खोल दिए थे। ब्राहमणों को टैक्स वसूलने व कलेक्टरी के कामों पर नियुक्त किया गया था और मुहम्मद बिन कासिम ने मंत्रालय का उच्च स्तर का पद अपने समय के एक प्रसिद्ध दार्शनिक काका को प्रदान किया था। सत्य तो यह है कि अरबों के अन्तर्गत सिन्ध धार्मिक स्वतंत्रता की धरती थी।"

उपरोक्त बयान किसी मुसलमान इतिहासकार का नहीं वरन् एक हिन्दू विद्वान का है। उस समय की बात है जब इस्लाम की विजय पताका का जोर नील से लेकर सिन्ध के तटों तक पहुंच चुका था। विजय का नशा कुछ कम नही होगा। विजेता कौमें अपने बल, शक्ति घमंड आदि दिखाने के लिए बहुत कुछ कर गुजरती हैं और पराजित कौमों का हर दिन और हर रात अत्यन्त पीड़ा, यातना व दुख में बसर होता है जिसके प्रमाण के लिए हिन्दुस्तान का प्राचीन इतिहास ही एक बड़ी गवाही है कि हिन्दू आर्य हिन्दुस्तान आये तो यहां के प्राचीन निवासियों को किस प्रकार गुलाम बनाकर रखा। यहां तक कि आज तक उनको शुद्र की उपाधि से ही याद किया जाता है। लेकिन यह केवल मुसलमानों की ही विशेषता है कि वह सत्ता पाकर भी घमंड का शिकार नहीं हुए। इतने विशाल क्षेत्र और लम्बी अवधि में कहीं भी सीमा से आगे नही बढ़े और अपनी गैर मुस्लिम जनता से केवल इसलिए कि वे गैर मुस्मिल हैं दुर्व्यवहार नहीं किया क्योंकि उनके सामने अल्लाह का यह आदेश रहा है –

"निःसन्देह अल्लाह जुल्म करने वालों को दोस्त नहीं रखता।"

यह शिक्षा सीधे मार्ग का रास्ता दिखाती है सच्चाई व न्याय पर स्थापित रखती है और ईश भय और सन्धियों की पाबन्दी करना सिखाती है। इन गुणों के [illegible] के लिए हम सिन्ध के बौद्धों का वह बयान भी प्रस्तुत करते हैं जो उन्होंने मुहम्मद बिन कासिम के हमले के समय राजा दाहिर को सुझाव देते हुए दिया था–

"हमको अच्छी तरह मालूम है कि मुहम्मद बिन कासिम के पास हज्जाज का आदेश है कि जो शरण चाहे उसे शरण दो। इसलिए हमें पूरा विश्वास है कि आप इसको यदि उचित समझें, तो हम इससे समझौता कर लें क्योंकि अरब ईमानदार और अपनी सन्धियों के पाबन्द हैं। (चचनामा एलीट १.१५६)

क़ादियानियों से होश्यार रहिये और अपने भाइयों को होश्यार रखिये। इनके बारे में मालूमात के लिए हमको लिखिये।

शोब–ए–दावत–व–इर्शाद
नदवतुल उलमा लखनऊ

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

इस्लाम और समाज सुधार

"मज़लूम के दिल का हर नारा तासीर में डूबा होता है
ज़ालिम को ख़बर कर दे कोई अन्जामे सितम क्या होता है

हैदर अली

अल्लाह पाक ने इन्सान को पूरी मख्लूक (सृष्टि) में अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) बनाया है बाक़ी समस्त सृष्टि को इन्सान का सेवक (खादिम) बनाया है पूरी मखलूक किसी न किसी रूप में इस मनुष्य की सेवा कर रही है चांद, सूरज, जमीन आसमान, फल, फूल, सोना चांदी जैसी अनेक वस्तुओं से मनुष्य फायदा उठा रहा है। लेकिन मानव जाति को ईश्वर ने खासकर अपने लिए पैदा किया है इसलिए मनुष्य का परम् कर्तव्य है कि ईश्वर का बन कर रहे उसी से लौ लगाए, उसी में श्रद्धा और आस्था रखे, उसी के सामने नत् मस्तक हो। इन्सान को समझ दी गयी है ताकि वह प्रकृति से प्राकृतिक रूप से फायदा उठाए और अपने रचियता की उपासना करे साथ ही साथ मानव जाति के प्रति प्रेमभाव रखे मनुष्य परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है अतः जो मनुष्य से प्रेम करेगा ईश्वर उससे प्रसन्न होगा। एक दूसरे का सम्मान करना ग़रीबों तथा असहाय लोगों की सहायता करना उनका सामाजिक राजनीतिक आर्थिक धार्मिक हक दिलाना एक दूसरे के मान मर्यादा एवं सम्मान की हिफ़ाज़त करना महान कार्य है। पूजा पद्धति, रस्मोरिवाज, धार्मिक अनुष्ठान वेश भूषा के भिन्न होने के बावजूद हमारी आत्मा अन्दर की मानवता, इनसानियत रहमदिली (करूणा एवं दया) क भाव एक होना चाहिए। झूठ रिश्वत भ्रष्टाचार, गबन चोरी रक्तपात, मार काट किसी की बहू बेटी पर गलत नज़र, बलात्कार से बचना बुराई से नफरत हर एक को होनी चाहिए। इन बुराइयों को दूर करने के लिए सभी मानव प्रेमियों और धर्माचार्यों को भरसक प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि जब समाज के बड़े वर्ग में ये पाप और बुराइयां पल बढ़ कर उनकी कार्यशैली (मक़सद) का रूप धारण कर लेती हैं तो एक पापी समाज का जन्म होता है हर धर्म में ऐसे कुकर्मी होते हैं फिर ऐसी जेहनियत (प्रवृत्ति) वाला समाज अपने पापों और कुकर्मों को सामाजिक मान्यता एवं कानूनी रूप देने के लिए धर्म की आड़ लेता है दीन व धर्म की गलत तशरीह (व्याख्या) करके अपने अनुचित कर्मों को उचित ठहराने और सामाजिक जनमत (राय आम्मा) को अपने फेवर में करने के लिए धर्म का गलत उपयोग करता है और दूसरे धर्म के प्रति नफरत हिंसा बलात्कार, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना को जिन्दा जलाने, मासूम बच्चों को फूंकने बस्तियों को बमों से पाटने को पुण्य और नेकी समझता है (निःसन्देह जालिमों पापियों के सजा देने के भी कुछ नियम कानून हैं परन्तु सजा के नाम पर क्रूरता बर्बरियत और मनमानी करने की इजाजत किसी को नहीं है। ईश्वर ने इसके नियम खुद बनाएं हैं) ऐसे पापी वर्ग की आत्मा विवेकहीन हो जाती है, मानवता अंश मात्र की नहीं रहती है जिस किसी ने किसी का नाहक कत्ल किया उसने गोया पूरी इंसानियत का गला घोंट दिया।" (कुर्आन)पूरी इंसानियत के कत्ल के पाप की गठरी उस कातिल के सर पर होगी। अतः मानव प्रेमियों और बुद्धिजीवी वर्ग को युद्धस्तर पर मानव प्रेम, एक दूसरे के मान सम्मान मानवता की श्रेष्ठता को जीवित करने के लिए अपनी सलाहियत (योग्यता) को झोंक देने की आवश्यकता है इस्लाम धर्म ने तो नैतिकता–मानव प्रेम आत्मा की शुद्धता शर्म व हया अश्लीलता नग्नता से बचने पर अंत्यधिक बल दिया है। कुकर्मों से बचना रिश्वत से बचना एक दूसरे के साथ रहने के उसूल कुरान में बता दिए हैं अल्लाह ने इस महान कार्य को इन्सानों की अकलों पर नहीं छोड़ा कि तुम जैसे चाहो कमाओ खाओ रहो सहो बस थोड़ी देर हमारी पूजा अर्चना इबादत कर लो सारे पाप धुल गए। बल्कि ईश्वर ने हर काम करने खाने, कमाने तिजारतो मुलाज़िमत, हुकूमतो सियासत, शादी ब्याह, उठने बैठने, सोने जागने खुशी गम, यानी पैदाइश से लेकर मौत तक के सारे तरीक़े और कानून खुद ईश्वाणी (वही) और अपने सन्देष्टा (पैगम्बर) के जरिए मुकर्रर कर दिए हैं अब आपको हम कुछ उदाहरण दे रहे हैं। मसलन व्यापार में इन्सान किसी को धोखा न दे तिजारत की आयतें नाज़िल करके तिजारत का

भ्रष्टाचार मिटाया फरमाया। ऐ व्यापारियों खबरदार, नाप तौल में कमी मत करना लोगों को उनके सामान में धोखा मत देना। अब इस्लाम की नजर में हर प्रकार की नाप तौल में कमी मिलावट करके क्रेता (खरीदार) को धोखा देना महापाप है जो ऐसा करेगा वह गोया कुरान की इस आयत को अपने व्यापार से निकाल रहा है और चन्द कौड़ियों के लिये खुदा के क़ानून को ठुकरा रहा है।

व्यापारी वर्ग की मानसिकता का उजागर करते हुए फरमाया : "हलाकत बर्बादी है ऐसे (पापी) व्यापारियों के लिए जो डण्डी मारते हैं जब खुद क्रय करते हैं तो पूरा पूरा लेते हैं लेकिन जब विक्रेता बन कर मार्केट में जाते हैं तो लोगों को धोखा देते हैं।" (क़ुर्आन) ऐसे पापी न तो खुदा के वफादार हो सकते हैं न अपने धर्म के और न समाज के । वे अपनी तिजोरियों को भरने के लिए जिसको पायेंगे डस लेंगे। ये तिजारत के आतंकवादी हैं। अगर कोई मुसलमान कुर्आन का पाठ करने वाला ऐसा कर रहा है तो वह भी पापी है। कुर्आन से उसे क्या फायदा होगा। वह झूठ बोल रहा है रिश्वत ले रहा है जिना कर रहा है पड़ोसियों को सता रहा है इस्लाम में वर्जित कार्य कर रहा है तो नमाज़ में कुर्आन की यही आयतें उसे क्या फायदा देंगी जबकि अमल से वही नमाजी इन्हीं आयतों को झुठला रहा है इसीलिए कुर्आन में तिजारत के कानून बता दिए ताकि कोई दौलत का पुजारी अपनी जेब भरने के लिए स्वयं कानून न बनाए अगर कोई पड़ोसियों पर जुल्म कर रहा है अपने तकब्बुर व घमण्ड का सिक्का बिठा रहा है तो वह समाज का वफादार कैसे हो सकता है। कुर्आन और इस्लाम को अपनी कार्यशैली से नष्ट कर रहा है। इन तमाम बुराइयों का (Effect) असर दूसरों पर तो बाद में पड़ेगा पहले खुद उसके दीन पर पड़ेगा। इन तमाम बुराइयों से बचकर खूबियों से संवरने का नाम है मुसलमान! हमारे इस्लामी विद्वानों ने इस पर अमल कर के एक शान्ति प्रिय समाज की स्थापना की थी। लेकिन अफसोस कि मुस्लिम कौम एक भीड़ बनकर रह गयी है इसका काम था अच्छे पड़ोसी अच्छे ताजिर। अच्छे मानव बनाए इसका मिशन था कि भ्रष्टाचार रिश्वत गबन, जाल साजी से समाज को नजात दिलाए । इसके पास इस्लाम जैसा पाक–साफ दीन कुर्आन पाक और हदीस पाक जैसी अज़ीम दौलत थी की शानदार तारीख थी आज के मुसलमानों का एक बड़ा तबक़ा खुद इन बुराइयों के दल दल में फंस कर रह गया है। अल्लाह ने इसी लिए बदले का एक दिन रखा है जहां जीवन का हिसाब चुकाना पड़ेगा–अल्लाह ने अपने नबियों और उनके वास्ते से सभी नेकी फैलाने वालों को हुक्म दिया है आप लोग उनके वास्ते से सभी नेकी फैलाने वालों को हुक्म दिया है आप लोग लोगों का मार्गदशर्न करते रहें, आप पर यह नहीं है कि किसी को जबरदस्ती अमल कराएं। (इन्न इलैना इयाबहुम सुम्मा इन्न अलैना हिसाबहुम) सब को हमारे ही पास आना है हम उनसे हिसाब ले लेंगे।

(पृष्ठ ३३ का शेष)

काट कर फेंक दो, इतना कह कर वह आगे बढ़ गया तभी उसके पीछे से एक घुड़सवार आया और अपना खंजर उस अफसर की पीठ में उतार दिया और गौथ कौम जो बीस हजार थे बगैर तलवार निकाले मुसलमानों में जा मिले राडर्क यह देखकर गुस्से से पागल हो गया। गौथ कौम ने यह इसलिए किया कि राडर्क उन पर अत्याचार किया करता था वह राडर्क को पसन्द नहीं करते थे और उसका शासन समाप्त करना चाहते थे इसलिए वह मुसलमानों से मिल गये थे फिर जब युद्ध आरम्भ हुआ तो रणभूमि बर्बरों के जयकारों एवं नारों से गूंज उठी बहुत घमासान युद्ध हुआ अन्त में राडर्क पर मुसलमानों की विजय हुई राडर्क अपनी सेना से भाग कर समुद्र में डूब मरा उसकी तलवार और जूते और घोड़े समुद्र के किनारे पाये गये मगर उसकी लाश कहीं नहीं मिली। राडर्क की सेना मुसलमानों को कैद करने के लिए बड़े बड़े रस्से लाई थी अब उन रस्सों में राडर्क की सेना के तीस हजार सैनिक, मुसलमानों ने बांध लिए यह वह युद्ध था जो मुसलमानों ने अपनी जान पर खेलकर लड़ा था जो इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखने योग्य है यह युद्ध केवल एक ईसाई की फरयाद पर लड़ा गया था मुसलमानों की ग़ैरत को यह पसन्द न था कि वह एक मजलूम की फरयाद को न पहुंचे। मुसलमानों ने यह युद्ध आठ दिन तक लड़ा आठवे दिन विजय प्राप्त की इन आठ दिनों के बदले अल्लाह तआला ने आठ सौ साल तक मुसलमानों को स्पैन का मालिक बना दिया मुसलमानों का शासन वहां पर आठ सौ साल रहा। परन्तु जब स्पेन के मुसलमान अपने मालिक को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन का शासन छीन लिया।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : हमारे शहर में एक छोटी सी जमीन में एक छोटा सा बाग़ीचा और कुछ कब्रें थीं और उसके इर्द गिर्द चहार दीवारी थी सरकार ने यह जमीन शहर की कारपोरेशन को इस शर्त पर दे दी कि वह उसे बाग़ीचा ही की शक्ल में बरकरार रखो लेकिन कारपोरेशन ने इस शर्त को ध्यान में रखे बिना लगभग दो माह पहले इस जमीन पर दुकानें बनाने का काम शुरू कर दिया जब संगे बुन्याद रखने के लिए खुदाई शुरू हुई तो हड्डियां निकलीं जिससे मुसलमानों में एहतिजाज का जज़्बा पैदा हुआ और कोटे द्वारा काम रुकवा दिया।

यहां सवाल यह पैदा हुआ कि कारपोरेशन या कोई जमाअ़त या शख्स ऐसी जमीन पर जिसमें कब्रें हों दुकान बनवा सकते हैं ? आज भी उस जमीन में कुछ पुरानी और पुख्ता क़ब्रों के निशानात और आसार हैं इस लिए इसका उत्तर जल्द भेजें।

उत्तर : यह जमीन का टुकड़ा वक्फ़ होगा या किसी मुसलमान की मिल्कियत हो गी इस लिए सरकार या कारपोरेशन या किसी व्यक्ति या जमाअत को यह हक नहीं कि उस पर दुकानें बनाए मय्यित की बेहुरमती होगी इसलिए मुसलमानों पर ज़रूरी है कि जोरदार एहतिजाज करें और मांग करें कि कब्रों को बाक़ी रखते हुए बाग़ीचा बना दिया जाए जैसा कि पहले था।

प्रश्न : एक व्यक्ति ने २० बीघा जमीन मस्जिद के लिए वक्फ़ की है, मस्जिद के पास इतनी रक़म नहीं है कि वह सिंचाई के लिए टयूब वेल का इन्तिज़ाम कर सके इस लिए फसल का पूरा दारोमदार बारिश के पानी पर रहता है इस बिना पर सालाना आमदनी बहुत ही कम होती है और उसमें से सौ रूपया टैक्स में निकल जाते हैं। इस लिए मौजूदा इन्तिजामकार चाहते हैं कि इस ज़मीन को बेचकर इन पैसों से कोई मकान बनवा लें या ख़रीद लें कि आमदनी जियादह है। इस नियत से यह वक्फ की हुई ज़मीन बेच सकते हैं या नहीं ?

उत्तर : वक्फ करने वाले ने वक्फ़नामा में बेचने की इजाज़त दी हो या वक्फ़ उस हालात में हो कि उससे कोई फाइदा हासिल न हो सके तो बेचने की इजाज़त है। अगर कुछ भी लाभ हासिल होता है तो बेचने की शरीअ़त के अनुसार इजाज़त नहीं है।

(विस्तार के लिए देखें शामी भाग ३ पेज नं. ५३५)

प्रश्न : तरावीह में खत्म कुर्आन के मौके पर शीरीनी बांटने के लिए चंदा किया था उसमें से कुछ पैसे बच गये हैं, क्या उनको मस्जिद के कामों में इस्तिमाल कर सकते हैं, या वह पैसे इमाम साहब ही को दे दिये जाएं ?

उत्तर : जिस मकसद और गरज़ के लिए चंदा किया हो उसी में चंदा की रक़म इस्तिमाल करना चाहिए, अगर रक़म बच गई हो तो चंदा देने वाले की इजाज़त से दूसरे कामों में इस्तिमाल कर सकते हैं, यह इमाम का हक़ नहीं है कि बची हुई रक़म उनको देना जरूरी हो, खत्म कुर्आन के वक्त शीरीनी तकसीम करने के लिए चंदा करने का तरीका गलत है चंदा नहीं करना चाहिए अगर कोई शख्स रस्म की पाबंदी के बिना खुशी से शीरीनी तक़सीम करे तो मना नहीं।

प्रश्न : जब कोई आदमी कारोबार शुरू करता है तो सरकारी आफिस से उसे मदद के तौर पर कुछ रक़म जिसको सब.सी.डी. कहते हैं मिलती है उसकी दो सूरतें हैं।

१. आदमी अपने ज़ाती कुछ हजार रू० लगाकर कारोबार शुरू करता है उसके बाद सरकारी आफिस कुछ मदद के तौर पर उसे देता है और उसका बैंक से कोई सम्बन्ध नहीं होता तो यह मदद लेना जाइज़ है या नाजाइज?

२. अपने पास ज़रूरत भर रू० न होने की वजह से सरकारी आफिस में जाता है और आफिस वाले बैंक के ज़रिए कारोबार के लिए रूपये दिलाते हैं इस सूरत में बैंक को सूद देना पड़ता है। यह सूरत जाइज़ है या नहीं।

उत्तर : अगर तहक़ीक़ से यह बात सही है कि बतौर मदद वह रक़म दी जाती है और उस पर कोई सूद नहीं लिया जाता तो यह सूदी मामला नहीं

है। इसलिए दुरुस्त है।

२. बैंक से सूदी मामला करना दुरुस्त नहीं अगर बहुत ही जियादह मजबूरी हो तो जितनी रक़म से ज़रूरत पूरी हो जाए उतनी ही मिक़दार में केवल सूदी कर्ज़ लेने की इजाज़त है उससे जियादह लेना दुरुस्त नहीं।

(अलबहरूर्राइक़ भाग ६ पेज नं. २२६)

प्रश्न : औरत को निकाह के वक्त सहेलियों और दूसरे रिश्तेदारों की तरफ से बतौर सलामी या बतौर बखशिश जेवर या सामान आदि जो मिला हो या औरत ने अपनी रक़म से खरीदा हो उसका मालिक कौन है ?

उत्तर : औरत को जो कुछ उसकी सहेलियों और भाई बहनों और रिश्तेदारों की तरफ से सलामी या हदिया के तौर पर मिला हो उसकी मालिक औरत है इसी तरह जो चीज़ें अपने पैसों से खरीदी हों उसकी मालिक भी औरत ही है।

प्रश्न : मेरे सात लड़के और चार लड़कियां हैं जिनमें से तीन लड़के और दो लड़कियों की शादी हो चुकी है और उनकी शादी का खर्च मैंने उठाया और चार लड़के और दो लड़कियों की शादी बाक़ी है। शादीशुदा लड़कों में से दो लड़के यह कह रहे हैं कि हमको हमारा हक़ दे दो वह अलग होना चाहते हैं तो क्या मुझे उन दोनों का हक़ अदा कर देना चाहिए अगर अदा करना ज़रूरी है तो किस तरह अदा करूं ?

उत्तर : जिन चार लड़के और दो लड़कियों की शादी करना बाक़ी है अगले बच्चों की शादी के वक्त जितना खर्च हुआ था उनको उतना ही बतौर हदिया देकर मालिक व मुख्तार बना दिया जाए ताकि वह अपनी शादी के वक्त उसको इस्तिमाल करें उसके बाद जो बाक़ी बचे उसके आप मालिक हैं जिन बच्चों से ज़बरदस्ती मुतालबा का हक़ नहीं है अगर आप उनको कुछ देते हैं तो सबको बराबर सराबर दें।

प्रश्नोत्तर

मौलाना मुहम्मद तारिक़ नदवी

प्रश्न : *चिड़ियों को पिंजड़ों में बन्द रख कर पालने का क्या हुक्म है?*

उत्तर : चिड़ियों को पिंजड़ों में बन्द रखने में कोई हरज नहीं जब कि उनके दाना पानी का अच्छा प्रबन्ध किया जाए।

प्रश्न : *दूसरे के खून से इलाज कराने का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : जब दूसरे का खून लेने की मजबूरी आजाए तो एक भाई का अपना खून देकर दूसरे भाई की मदद करने में कोई हरज नहीं जबकि काम डाक्टर (तबीब) की निगरानी में हो और वह यक़ीन दिलाए कि खून देने वाले को कोई नुकसान न होगा।

प्रश्न : *क्या नाबालिग़ बच्चे के रोज़ा, नमाज़ तिलावत आदि का सवाब उसके मां बाप को मिलेगा ?*

उत्तर : नाबालिग़ बच्चे की नेकियों का सवाब खुद उसको मिलेगा, उसकी बरकतें उसको प्राप्त होंगी अल्बत्ता बच्चे की शिक्षा तथा भलाई की तरफ उसको मोड़ने का सवाब मां बाप को अवश्य मिलेगा।

प्रश्न : *सिग्रेट पीने का क्या हुक्म है?*

उत्तर : सिग्रेट पीना (तम्बाकू का प्रयोग किसी भी प्रकार) मक्रूह है क्योंकि यह गन्दी चीज है और इसमें बड़े नुक्सानात हैं। अल्लाह तआ़ला ने तो अपने बन्दों के लिए खाने की चीजों में से पाक़ीज़ा (पवित्र तथा शुद्ध) चीज़ें ही हलाल की हैं।

प्रश्न : *रेडियो आदि सुनने का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : उत्तर रेडियो में कुर्आन मजीद की बातों और अहम खबरों से सम्बन्धित जो कुछ प्रसारित किया जाता है उसे सुनने में कोई हरज नहीं इसी प्रकार दूसरे लाभदायक प्रोग्राम सुनाना तथा खबरें सुनना जाइज़ है।

प्रश्न : *बैंक की नौकरी का क्या हुक्म है?*

उत्तर : बैंक की नौकरी जाइज़ नहीं इस लिए कि यह गुनाह के कामों में सहयोग देना है।

प्रश्न : *क्या तौबा से समस्त पाप क्षमा हो जाते हैं ?*

उत्त र : हां जिन पापों का सम्बन्ध केवल अल्लाह से है वह सभी पाप सच्ची तौबा से क्षमा (मुआ़फ़) हो जाते हैं, यहां तक कि कुफ़्र और शिर्क भी सच्ची तौबा से मुआ़फ हो जाते हैं। परन्तु जो पाप ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध किसी बन्दे से है जैसी *यतीम का माल* खा जाना, किसी पर अत्याचार करना ऐसे पाप हक़ वाले का हक़ चुकाने या उसके क्षमा कर देने के बादा ही तौबा से मुंआफ़ हो सकेंगे।

फलों का राजा आम

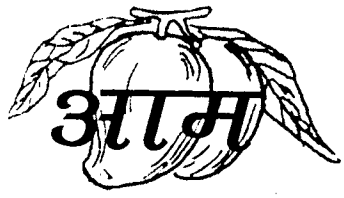

मुहम्मद उस्लूब

अल्लाहतआला ने गर्मी के मौसम में जो रसीले फल प्रदान किये हैं उनमें से एक लाजवाब, बेमिसाल फल आम है। आम स्वादिष्ट, मनमोहक, रंग और सुगन्ध के कारण फलों का राजा कहलाता है। आम अपने नाना प्रकार की विशेषताओं व गुणों के आधार पर संसार भर में प्रिय और पसन्द किया जाने वाला फल है और क्यों न हो जबकि एक तरफ़ यदि स्वाद और मज़े में लाजवाब है तो दूसरी तरफ़ दवा और टानिक के तौर पर भी अपनी मिसाल आप है।

आम के अंश :

विटामिन ए ०.४८, विटामिन बी ५.६ विटामिन सी ०.१३, कैलशियम ४.१, फासफोरस ४.१, पोटेशियम ४.१, लोहा ०.६३, चिकनाई ०.६१, प्रोटीन ५.६ कारबोहाइड्रेट १.८, खनिज नमक ०.६३ और इसी के साथ आम में क्लोरीन (Clorine) गुलोकोज़ (Glucose) और पानी (Water) भी काफ़ी मात्रा में होता है। क़ल्मी आम में, ताक़त, कार्बोहाइड्रेट और खनिज होता है।

आम के लाभ :

आम की तासीर (असर) गर्म होती है। मीठा और पका आम काम शक्ति को बढ़ाने के साथ साथ शरीर में ताज़ा खून बनाता है जिससे चेहरे में चमक पैदा होती है और चेहरा सुर्ख़ व सफ़ेद बनता है। आम शरीर को मोटा ताज़ा बनाता है। और दिल व दिमाग़, जिगर, मेदा, गुर्दे, पठ्ठों फेफड़ों और हड्डियों को भी शक्ति देता है और कब्ज़ के लिए आम बहुत लाभकारी है। आम के प्रयोग से दूध पिलाने वाली महिलाओं में दूध की मात्रा बढ़ जाती है। यह बलग़म को पतला बनाता है जिसकी वजह से खांसी और दमा के मरीज़ों के लिए भी लाभदायक है।

यदि खाना ठीक से पचता न हो और हाज़मा खराब रहता हो तो पांच तोला (६० ग्राम) मीठे आम का रस लेकर उसमें दो ग्राम सोंठ पीस कर मिलाएं और हर रोज़ इसी तरह प्रातः समय एक हफ़्ते तक इस्तेमाल करें। हाज़मा के साथ साथ यह रस दिल और जिगर को भी ताक़त देता है। यदि सांस कठिनाई से आ रहो हो, कमज़ोरी बढ़ रही हो, रंग पीला हो गया हो तो भी आप इस से लाभ उठा सकते हैं।

ख़ून के लिए :

यदि शरीर में ख़ून की कमी हो, शरीर कमज़ोर और दुबला पतला हो, शरीर में सूखापन और पीलापन हो तो एक पाव पके हुए आम का रस (जो कि पतला और ताज़ा हो) आधा पाव गाय का ताजा दूध, शुद्ध घी एक दर्मियानी चम्मच, अदरक का ताज़ा रस एक चाय का चम्मच, चीनी पचास ग्राम, इन सभी चीजों को आपस में मिलाकर पीसलें। आम का रस धीरे धीरे बढ़ा भी सकते हैं। दो महीने तक केवल यही नुसख़ा इस्तेमाल करें और कोई चीज़ भोजन के रूप में प्रयोग में न लाएं। बाज़ चिकित्सकों का कहना है कि दुबलेपन का इससे अच्छा नुसख़ा मिलना कठिन है।

दिमाग़ी कूवत के लिए :

दिमाग़ी कूवत के लिए आम बहुत ही लाभदायत है। यदि दिमाग़ कमज़ोर हो और दिमाग की कमज़ोरी से सिर में दर्द रहता हो और आंखों के आगे अंधेरा छा जाता हो तो उसके लिए निम्नवत उपचार बहुत ही लाभदायक है –

मीठे आम का ताज़ा रस एक पाव, ताज़ा दूध एक छटांक (६० ग्राम), एक चाय का चम्मच अदरक का ताज़ा रस इन सबको मिला कर पूरी खुराक़ पीलें। इस प्रकार रोज़ाना इस्तेमाल करें। अगर चाहें तो स्वाद के लिए चीनी भी मिला सकते हैं।

आंतों की कूवत के लिए :

यह नुसख़ा आंतों को और मेदे को शक्ति देता है, भोजन अच्छी तरह पचाता है। पुराने दस्तों में भी लाभप्रद है और बवासीर के लिए भी उपयोगी है –मीठे आम का रस ताज़ा और पतला पांच तोला (६० ग्राम), मीठी दही दो तोल (२५ ग्राम), अदरक का ताज़ा रस एक चाय का चम्मच । सभी चीजों को अच्छी तरह मिला कर पीलें। यह ख़ुराक़ दिन में तीन बार तक दी जा सकती है और आम का रस पांच तोला की जगह कुछ दिन इस्तेमाल के बाद दस तोला भी किया जा सकता है।

तिल्ली की सूजन के लिए :

यदि तिल्ली पर सूजन हो तो एक छटांक (६० ग्राम) मीठे और पके हुए आम का रस लेकर उसमें एक तोला शहद मिलायें और प्रति दिन इस्तेमाल

करें। इसके इस्तेमाल से कुछ दिनों में तिल्ली की सूजन समाप्त हो जाएगी।

मतली–गर्भवती महिलाओं के लिए :–

आम का रस दो तोला (२५ ग्राम), गुलाब जल दो तोला (२५ ग्राम), गुलोकोज़ एक तोला, कैलशियम वाटर ढाई तोला, सब को आपस में मिला लें और इस तरह की दो तीन खुराकें रोज़ाना दें। बहुत लाभदायक है और इससे वह लाभ सामने आएंगे कि इसके सामने क़ीमती इंजेक्शन भी फ़ेल हो जाते हैं।

तपेदिक़ के लिए :

तपेदिक़ के लिए निम्न नुस्ख़ा बहुत कामयाब है। इस के प्रयोग से तपेदिक़ का मरीज़ स्वस्थ होने लगता है।

नुसख़ा – चीनी के बरतन में मीठे तोजे और रसीले आमों का ढाई सौ ग्राम रस लेकर उसमें साठ ग्राम असली शहद मिलाकर सुबह शाम इस्तेमाल करें और हर रोज़ दो तीन बार गाय या बकरी का ताजा दूध भी पी लिया करें।

पेचिस के लिए :

यह नुसख़ा पेचिस और पेट की दूसरी बीमारियों के लिए लाभदायक है। प्रातः नौ बजे के क़रीब दो बड़े साइज़ के पके आम लेकर उन को छील लें और आम के छोटे छोटे टुकड़े पीस कर कलईदार बर्तन में डाल दें और गर्म किया हुआ ठंडा दूध उतनी ही मात्रा में डालें कि आम के टुकड़े दूध में डूब जायें। कुछ देर ऐसे ही छोड़ कर आम के इन टुकड़ों को खाकर ऊपर से बचा हुआ दूध पीलें और हर तीन घंटे बाद दो दो ग्राम दूध पीना चाहिए। इस बात का ध्यान रखें कि आम और दूध के सिवा और कोई दूसरी चीज़ खाई या पी न जाए। जब दस्तों में कमी हो जाए तो बीमार को ऊपर लिखे हुए तरीके के अनुसार दोपहर के समय भी दो आम दूध के साथ देना शुरू करें। पन्द्रह दिन इसी प्रकार आम खेलाने से पेचिस की बीमारी दूर हो जाएगी।

कच्चे आम को भी दवा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। कच्चा आम अनावश्यक प्यास और लू से सुरक्षा प्रदान करता है। तबीयत में प्रसन्नता और ताज़गी पैदा करता है। बुखार से बेचैनी, और गर्मी से होने वाले सिरदर्द में लाभदायक होने के साथ साथ कच्चा आम भूख भी बढ़ाता है।

लू और प्यास से बचाव :

कच्चे आम शाम को भूभल (गर्म राख) में भून कर रात भर किसी खुली जगह पर रख दें। सुबह दोनों आमों को मसल कर शरबत बना लें और काली मिर्च, नमक, भुना हुआ ज़ीरे का पाउडर दो तीन चुटकी डाल कर इस शर्बत को पी लें। इसके पीने से लू असर न करेगी और अनावश्यक प्यास भी न लगेगी और दिन भर तबीयत पर ताज़गी और खुशी छाई रहेगी।

(रोजनामा राष्ट्रीय सहारा)

(पृष्ठ ३३ का शेष)

यह मुल्क तो उनके हाथ चालीस वर्ष तक न लगेगा। यूं ही जमीन में सरमारते फिरते रहेंगे। सो आप इस बेहुक्म कौम पर अफसोस न करें" चालीस वर्ष की इस मुद्दत में वो लोग मर गये। जो मिस्र में गुलामी और जिल्लत में परवान चढ़े थे। उसके बाद एक नई नस्ल पैदा हुई। जिसने इस वादीयेतीह में परेशानी सख़्ती और तंगी में पले बढ़े थे। यह ही नौजवान कौम का भविष्य थे।

(पृष्ठ ३० का शेष)

प्रयोग कर के रोका जा सकता है।

भारत में हिप्टाइटिस का रोग तेजी से बढ़ रहा है। शरीर से अमोनिया का अधिक निकास हिप्टाइटिस में बेहोशी का कारण बनता है। दही का अधिक प्रयोग इस निकास को रोक सकता है। दही में मौजूद लेकटिक ऐसिड (Lectic Acid) के जीवाणु शरीर में अमोनिया के अमल को रोक देते हैं। अतः इस बीमारी में दही का प्रयोग बहुत लाभदायक है।

पीलिया रोग शहद में दही मिला कर देने से ठीक हो जाता है। लस्सी कुछ चर्म रोगों में जैसे इग़ज़िमा, सूरयाइस, या चम्बल की बीमारी के उपचार के लिए लाभप्रद है। नर्म मलमल का कपड़ा लस्सी में भिगोकर प्रभावित स्थान पर बान्ध दें। प्रातः दही हटाने के बाद जिल्द को अच्छी तरह साफ कर लें इस अमल से सुर्खी और जलन समाप्त होने लगती है। दही में स्वगोल की भूसी का प्रयोग करने से दस्त और पेचिश शीघ्र ठीक हो जाती है। दही जिल्द और सनायु तंत्र को स्वास्थ प्रद अंश प्रदान करता है। दही में जिल्द पर धूप के हानिकार प्रभाव को रोकने की क्षमता है। इसमें मौजूद जीवाणु जिल्द को मुलायम और चमत्कार बनाते है। चेहरे को सुन्दर बनाने के लिए दही में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाया जाए तो चेहरा साफ और चमकदार हो जाता है। इस अमल से जिल्द को जरूरी विटामिन 'सी' और उचित मात्रा में अद्रता प्राप्त होती है।

●●●

Every
Time You
Come to ISI

Join our ISI
Family Today

दुनिया की सभी उपयोगी सेवाएं तत्काल लाभार्थ उपलब्ध

All Serviceable are absolutely

Free, Faith and Faternity, immediately Placements available for all. Job & Career Management Oppourtunity genrated Dicision Markers more effectively their life master peace change.

The ISI Group

Dr. Musharraf Husain Rizvi
Managing Director & Chairman

Managed by
Dr. K.G.B. Daughter & Sons

INTERNATIONAL SERVICES INSTITUTE

WORLD PEACE CLINIC
MEED AUTO SIP TRY EDEN REST (MASTER)
WANT TO DIE GO TO HOSPITAL

Allah Gurantee any cure nor we can assure any time limit for a cure we under take treatment because in our past Experience we have found cure and relief in all case by Allah

AL BAIT-UL-MA'MOOR UNIVERSITY

Director
Capt. A.N. Rizvi (M.Navy)
Dr. Azam Rizvi (W.P.M.)
Dr. Shariq Rizvi
Executive Committee
Miss Shareka, Ariz, Sofia, Shaily, Arshi, Sadiq, Sameen, Aqdas, Alqa, Aniqa, Shaney nabi rizvi, Ansar Ahmad
Laika

Mrs. - Tasneem Rizvi (GM)
Chief Editor BBSB
Miss- Azmi Rizvi
Secretary
Miss- Rimsha Rizvi
President
Adv. Ashok Kumar Dutt
Gen Secretary

IDEALIZE SYSTEM INDIA & INTERNATION A
UPBOO4, FORUM FOR FAITH AND FRATERNITY
SECRETARY, NATIONAL EX-SERVICEMAN CO-ORDINATION COMMITTEE U.P. SECRETATRIATE UNIT

A 20-6-64, Master Peace, Manwana Khurd, Meerut, U.P. India
E-Mail : Musharrafazam@rediffmail.com, isi_azam@rediffmail.com

दही

हकीम सै० गौसुद्दीन

दही को अंग्रेजीमें **Curd** या यूगर्ट (**xogurt**) कहते हैं। यूगर्ट तुर्की भाषा का शब्द है। समझा जाता है कि सबसे पहले दही तुर्की में बनाया गया। चुनानचः एक तुर्की लोक कथा के अनुसार एक खानाबदोश ने रेगिस्तान यात्रा के बीच कुछ दूध बकरी की खाल से बने थैले में डाला और उसे अपने ऊंट की कमर के साथ बांध दिया। अगले पड़ाव पर जब उसने थैला खोला तो दूध एक जमे हुए मिश्रण में बदल चुका था। रेगिस्तान की गर्मी और थैली में मौजूद जीवाणु ने दूध को दही में बदलने का काम किया।

दही न केवल हिन्दुस्तान बल्कि पूरी दुन्या में प्रयोग किया जाता है। तुर्की मिश्र, योगोस्लेविया, रूमानिया, रूस, यूरोप और अमरीका में भी दही पसन्द किया जाता है। भारत उप महा द्वीप में दूध की मात्रा का लगभग ५० प्रतिशत दही में तबदील कर लिया जाता है।

दही दूध की ख़मीर उठी हुई शकल है। रूचिकर और स्वादिष्ट होने के कारण लोग इसे अधिक प्रयोग करते हैं। दही एक स्वास्थ प्रद भोजन है। दही खाना हज़्म करने की क्षमता रखता है। दही प्रयोग करते हैं। दही खाने के बाद लोगों को सामान्य रूप से नींद आती है क्योंकि दही में शान्ति दायक अंश शामिल हैं जो स्नायुतंत्र को सुख पहुंचाते हैं।

दही एक महत्वपूर्ण और आश्चर्य जनक भोजन है क्योंकि यह मांस को शरीर का अंश बनाने की उच्च कोटि की क्षमता रखता है तथा भोजन में कैलशियम और राबटोफलावीन की बहुमूल्य मात्रा प्राप्त करने का प्रभावशाली साधन है।

दही के प्रयोग से गहरी नींद आती है। बहुदा लोग रात में खाना खाने के बाद दही का प्रयोग करते हैं। दही हर लुकमे के साथ आवश्यक आहार का अंश शरीर को प्रदान करता है। आदमी को रोजाना दोहजार कैलोरी की भोजन में आवश्यकता होती है और केवल दही एक प्याली मक्खन निकले दूध में फेंट लेने से इस मात्रा का सात प्रतिशत भाग प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त वह आहार अंश पहुंचाता है जिन्हें विशेषज्ञ अपनी भाषा में लाभप्रद, अतिरिक्त सहायक करार देते हैं। अर्थात इसमें मांस १७.५ प्रतिशत, कैलशियम ५० प्रतिशत विटामिन बी, ३० प्रतिशत पाए जाते हैं।

बलगेरिया निवासियों की लम्बी उम्र का कारण यह है कि यहां लोगों के भोजन में दही और छाछ खास तौर से शामिल है।

डा० गेलार्ड अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि दही से मेरी दिलचस्पी का कारण वह बैक्टीरिया हैं जो दही में पाए जाते हैं और जिनका कार्य बड़ी आंत तक पहुंचता है जिनमें बेकटिरिया की अहम भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त इन में कुछ विटामिन 'बी' भी शामिल रहता है। दूध में शामिल शकर जो तेज़ाबियत पैदा करती है और बीमारी के कारण विकास करने वाले अंगों में सड़न उठने लगती है, यह बेकटिरिया इन खराबियों पर काबू पाने की क्षमता रखते हैं यही कारण है कि दही खाने वाले लोग हर दशा में इससे लाभ उठाते हैं और शीघ्र स्वस्थ हो जाते हैं। एक सौ ग्राम दही में आहार के अंश का अनुपात इस प्रकार रहता है लसीका (शरीर की नमी का अंश) ८९.१ प्रतिशत, मांस ३.१ प्रतिशत, चिकनाई ०.४ प्रतिशत खनिज अंश ०.८ प्रतिशत, कैलशियम १४९ मिलीग्राम, फ़ासफोरस ९३ मिलीग्राम, लोहा ०.२ मिलीग्राम, विटामिन 'सी' एक मिलीग्राम, हरारा ६० मिलीग्राम, विटामिन ए १०२ आई०यू० दही में पाए जाते हैं।

दही अधिक जल्द हज्म होता है। एक घंटे में दूध केवल ३२ प्रतिशत हज़्म होता है जबकि इतने ही समय में दही ९१ प्रतिशत हज़्म हो जाता है।

दही मेदे और अतड़ियों के मरीजों मुख्य कर पुरानी पेचिस और दस्तों में आराम देता है। दूध का लेकटिक एसिड (स्बजपब ।बपक) और दही के लेक्टोज़ (स्बजवे) मेदे की बहुत सी अनियमताओं को ठीक करता हैं डाक्टर कहते हैं मेदे के घाव और मेदे की दूसरी तकलीफों में दही बराबर प्रयोग करते रहने से यह शिकायत दूर हो जाती है। इसके अतिरिक्त दही भोजन को पचाने के साथ साथ मेदे की गर्मी से भाप उठने का आसान इलाज है। इसके सर पर मालिश करने से नींद आ जाती है। रूस के नोबुल पुरस्कार पाने वाले प्रोफेसर टेनकोफ़ का कहना है कि समय से पहले आने वाले बुढ़ापे को रोज़ाना भोजन में दही

(शेष पृष्ठ २८ पर)

अरब देशों में सुधार की कोशिशें

सल्तनत उमान (मस्कत) के एक बड़े और मशहूर दीनी आलिम शैख ब्यूज़ इबराहीम उमर हैं और उन्हीं के स्तर के एक दूसरे बुजुर्ग हैं जिन का नाम शैख अली यहया मअ़म्मर। उन दोनों के दो लेख एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए है। शीर्षक "दाढ़ी मुड़ाना और तम्बाकू नोशी" है।

उपमहाद्वीप भारत, पाकिस्तान और बंगला देश में तो दाढ़ी का महत्व तो बहुत कुछ है। दीनी शिक्षक या आमिले दीन कोई दाढ़ी मुंडाने का साहस नहीं करता। साधारण मुसलमान भी जब दीन की तरफ आकर्षित होते हैं तो पहले दाढी रख लेते हैं लेकिन अरब देशों में स्थिति भिन्न है। इसका महत्व बिल्कुल नहीं के बराबर है। बड़े–बड़े आलिम, कुर्आन और हदीस की व्याख्या करने वाले भी इस को महत्व नहीं देते । थोड़े बहुत उलमा ऐसे नजर आ जाते हैं जो दाढ़ी रखते हैं। हरमैन शरीफ और नज्द के उलमा को छोड़कर जिनके अन्दर सुन्नत का सम्मान कायम है, जन साधारण और विशिष्ट लोगों में इस सुन्नत का महत्व नहीं है। सरकारी कर्मचारी, महाविद्यालयों के अध्यापक सब एक ही रंग में रंगे हुए हैं।

अरब के उलमा के यहां भी तम्बाकू सेवन भी वैसा ही जुर्म है जैसा कि दाढ़ी न रखना। नज्द में इसको न केवल इसे आलिमाना शान सभ्यता के खिलाफ समझा जाता है बल्कि ऐसे व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ना नाजाइज़ समझते हैं जो तम्बाकू का सेवन करता हो। मिस्र, शाम, लीबिया, अलजजाएर और दूसरे तमाम अरब देशों में तो दाढ़ी को इतना तुच्छ और मामूली मसला बना दिया गया है कि लोग इस पर ध्यान देने के लिए तैयार भी नहीं हो सकते। शुक्र है कि ऐसे माहौल में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो सुधार की कोशिशें करते रहते हैं और उन सुन्नतों को जिन्दा करना चाहते हैं जिनका चलन यही नहीं कि कम हो गया है बल्कि उसका अपमान भी किया जाता है। शैख ब्यूज और अली मुअमिर अपने अपने हलकों में बड़े सम्मान से देखे जाते हैं और दीनी मार्गदर्शन उन से प्राप्त किया जाता है। अलहम्दुलिल्लाह कि उन्होंने यह पुस्तिका लिख कर फ़र्ज़े किफ़ाया की अदायगी का काम अंजाम दिया है। इस पत्रिका में उन्होंने मिस्र के शैख शलतूत के फतवे भी नक्ल किये हैं और सहाब–ए–किराम, ताबईन, आइम्मा (इमामों) और मुस्लिहीने उम्मत (सुधारकों) की मिसालें दी हैं और बताया है कि दाढ़ी नबियों की सुन्नत है, दीन वालों की परम्परा है। उलमा ही नहीं बल्कि हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है।

यह आवाज एक अरब देश से उठी है अतः और अधिक प्रसन्नता की बात है। यदि उपमहादीप भारत, पाक के उलमा ने लिखा होता तो अचम्भा न होता और बहुत सी पुस्तिका इस विषय पर लिखी जा चुकी हैं।

इस पुस्तिका में इस विषय पर बात सीधे नहीं प्रारम्भ की गई है बल्कि एक कहानी के रूप में एक घटना बयान की गई है जैसे कि कोई अफ़साना हों। घर का माहौल है कहां कुटुम्ब का संचालन अपनी बीवी, बेटे बेटियों से बात कर रहा हो। इस सिलसिले में दाढ़ी मुंडाने और तम्बाकू सेवन का जिक्र आ जाता है। वह बल पूर्वक इसका विरोध करता है और फजूल खर्ची व स्वास्थ के लिए हानिकारक बताकर इस को अति अधिक घृणित और करीब करीब हराम होने का श्विास दिलाता है। दूसरा लेख फतवे के रंग का है जिस में हदीसे नबवी (सल्ल०) से दाढ़ी मुडाने को हराम साबित किया है।

सन् १९२७ का एक हिसाब

मदीना मुनव्वरा पहुंच कर मौलाना अ़ब्दुल बारी उनके वालिदैन और फ़क़ीर (मनाज़िर अह़सन) का क़ियामत एक ही जगह था। हम चारों के खाने का प्रबन्ध एक साथ था। जिस में खाना भी, नाश्ता भी और दूसरी चीज़ें भी। एक महीना तीन दिन में खाने का खर्चा एक आदमी पर कुल आठ रूपये आया।

(दरबारे नुबुव्वत की ह़ाज़िरी)

स्पेन की विजय

अली जौहर मुजफ्फरनगरी

जब से इस संसार की रचना हुई है ओर मानव जाति का निवास यहां पर हुआ है यहां पर प्रेम–स्नेह के साथ–साथ रणभूमि का इतिहास भी रहा है कभी अत्याचार कभी किसी की फरयाद पर सहायता के रूप में युद्ध हुए। कुछ ऐसा ही एक महायुद्ध इतिहास में मिलता है। जो स्पेन की भूमि पर लड़ा गया था यह महागाथा आरम्भ होती है सन् ७१० ई० में जब स्पैन में क्रिश्चन शासन था वहां का राजा राडर्क था जो स्पैन की राजधानी में अपने राज भवन में रहता था एक क्रिश्चन अफसर जिसका नाम काउन्ट जूलीयन था और जो उसका करीबी था उसकी बेटी जब शाही आदाब सीखने के लिए राजभवन में गयी जैसा कि वहां का नियम था तो राजा राडर्क उसके सौन्दर्य पर मोहित हो गया और रात्रि में बलपूर्वक उसके कुंवारेपन को लूट लिया इस लड़की का नाम फलोरिन्डा था और उसकी आयु इतिहास में सोलह या सत्रह लिखी गयी है जब यह बात फलोरिन्डा के पिता लूयिन को मालूम हुई तो उसने बदला लेने की ठानी और वह चुपके से फलोरिन्डा को महल से निकाल लाया और सहायता के लिए साउथ अफ्रीका के विजयी मुसा बिन नुसैर के पास पहुंच गया मूसा ने वलीद बिन अब्दुल मलिक को जो ख़लीफ़ा था, दमिश्क पत्र भेजकर स्पैन पर आक्रमण की आज्ञा चाही ख़लीफ़ा की तरफ से आज्ञा मिल गयी मुसाबिन नुसैर ने जूलियन के साथ बर्बर मुसलमानों की एक सेना भेज दी सेना का कमाण्डर तारिक़ बिन ज़ियाद था जो बर्बर था सेना की संख्या केवल सात हजार थी और सिर्फ तीन सौ घुड़सवार थे सेना ने लगभग बारह मील की यात्रा समुद्र में की और यह सेना जब स्पैन की भूमि पर उतरी तो उस स्थान का नाम जब से ही जबलुत्ताखिक पड़ गया जो अभी तक है सेना के उतरने के पश्चात तारिक बिन जियाद ने कश्तियों को आग लगवा दी और अपनी सेना को एक भाषण दिया जो आज तक इतिहास में सुरक्षित है और रहेगा सारी सेना बर्बर थी वह खुद बर्बर था मगर उसने अपनी सेना को बर्बर भाषा में सम्बोधित नहीं किया बल्कि अरबी भाषा में सम्बोधित किया फरमाया – अनुवाद 'ऐ वीर सोरमाओ, भागने का कोई मार्ग नहीं, समुद्र तुम्हारे पीछे है शत्रु तुम्हारे आगे है न इधर भाग सकते हो न उधर अब केवल यह मार्ग बचा है कि साहस, व हिम्मत के साथ मुक़ाबला करो, स्मरण रहे तुम्हारी संख्या इस देश में बहुत कम है तुम्हारी जरा सी कायरता तुम्हारा नाम व निशान मिटा सकती है तुम्हारे शत्रु के पास सेना बहुत है अगर तुमने साहस से काम न लिया तो तुम्हारी मर्यादा प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जायेगी अपने शत्रु पर टूट पड़ो और शत्रु को समाप्त कर दो मैं तुम्हारे साथ –साथ हूं अगर तुम रणभूमि में डटे रहे तो यहां की दौलत तुम्हारे कदमों में होगी अगर तुमने इनको पराजित कर दिया तो अल्लाह और उसके रसूल का दीन यहां भी प्रचलित हो जायेगा, स्मरण रहे सबसे पहले बढ़ने वाला सैनिक मैं हूंगा युद्ध में उठनेवाली तलवार सबसे पहले मेरी होगी अगर मैं वीरगति को प्राप्त हो जाऊं तो तुम किसी और को कमान्डर बना देना।

बर्बर सेना का इतना सुनना था किउनके शरीरों में नई तरंगें व भावनायें भड़कने लगीं इसलिए कि वह अल्लाह के दीन की प्रतिष्ठा एवं प्रसार व प्रचार के लिए लड़ रहे थे मुसलमानों के मुकाबले में राडर्क का अफसर थ्योडोमीर एक बड़ी सेना लेकर आया लेकिन मुसलमानों के सामने ठहर न सका और भाग गया जब पराजय की खबर रडार्क को मिली तो वह एक लाख की सेना लेकर मुकाबले में आया और तारिक बिन जियाद को भी मुसा बिन नुसैर की तरफ से पांच हजार सैनिकों की सहायता प्राप्त हुई दोनों सेनाएं रणभूमि में आमने सामने आ गयीं मुसलमानों की सेना राडर्क की सेना को देखकर कुछ संकोच में हुई मगर तारिक के भाषण ने उनकी भावनाओं को एड़ लगाई युद्ध आरम्भ होने से पूर्व एक गौथ अधिकारी ने राडर्क से आगे बढ़ने की आज्ञा चाही और आज्ञा लेकर अपनी गौथ कौम से कहा : आगे बढ़ो और मुसलमानों को गाजर मूली की तरह

(शेष पृष्ठ २४ पर)

बनी इस्राईल की कायरता

आसिफ़ अन्ज़ार

बनी इस्राईल मिस्र में जिल्लत व रुसवाई और गुलामी में जी रहे थे। उनके बच्चे इसी हाल में परवान चढ़े थे। जवानों पर बुढ़ापा भी इसी हाल में आया था। सो उनकी जीवन धारा सेवकों के अनुसार होकर रह गई थी। उनकी रगों में खून ठंडा पड़ गया था। उनकी हालत ये थी कि उनमें सरदारी की ताकत ही न थी। और न ही कभी अल्लाह के रास्ते में जंग–व–जिहाद की बात उनकी जुबान पर आती थी।

बनी इस्राईल दरबदरी की हालत में अपने दिन काट रहे थे। न उनका कोई वतन था। न उनकी कोई हुकूमत।

मूसा अ० ने अल्लाह के आदेश के अनुसार ये चाहा कि वो उस पवित्र भूमि में प्रवेश करें जो उनके पुरखों की है। वहां आजादाना और शहाना अंदाज में जीवन बितायें लेकिन मूसा अ० बनी इस्राईल की कम हिम्मती और कमजोरी को जानते थे। इसीलिए वो चाहते थे कि उनके शौक को हवा दी जाये और इस काम को उनके सामने सरल बनाकर लाया जाये।

इसलिए कि पवित्र भूमि पर हैसियों और कनआनियों ने कब्जा कर रखा था वो लोग बड़े शक्तिशाली और खूंखार थे। बनी इस्राईल उस समय तक उस पाक सरजमी में प्रवेश नहीं कर सकते थे। जब तक कि वहां से उन पाखन्डियों को निकाल न देते। इसलिए मूसा अ० ने बनी इस्राईल के सामने अल्लाह के इनआमों तथा उसकी ओर से बनी इस्राईल को सारे जगत पर बढ़ावा देने के बारे में बताया ताकि वो अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए दिल से तैयार हो जायें। और इस जिल्लत भरे जीवन से नफ़रत करने लगे। जो नबियों और राजाओं की औलाद के लायक नहीं।

मूसा अ० ने अपनी कौम से कहा कि तुम अल्लाह की उन निअ़मतों को याद करो जो उसने तुम पर की है। तुम्हीं में से बहुतों को उसने नबी बनाया और बहुतों को बादशाह और तुमको बहुत सी वो चीजें दी जो चीजें उसने संसार में किसी और को न दीं।

फिर उसके बाद मूसा अ० ने उनसे कहा कि अल्लाह ने यह पवित्र भूमि तुम्हारे भाग में लिख दी है। इस लिए उठो और अपने दुश्मनों को वहां से निकाल बाहर करो अल्लाह ताला जब किसी के भाग में कुछ लिख देता है तो उसको प्राप्त करना आसान हो जाता है और कोई चीज अल्लाह के फैसले को बदल नहीं सकती।

ऐ क़ौम उस मुकद्दस जमीन की ओर बढ़े चलो जो अल्लाह ने तुम्हारे भाग में लिख दिया है। मूसा अलै० को उनकी कायरता का डर भी था, इसलिए उनको हिम्मत दिलाने के लिये कहा देखो उल्टे पाव न भागना। इससे तुम बड़े घाटे में पड़ जाओगे परन्तु वही हुआ। जिसका मूसा अ० को डर था मूसा० अ० की इन तमाम बातों के जवाब में कहा "ऐ मूसा वहां तो बड़े दिलेर और जालिम लोग हैं हमतो उस समय तक वहां नहीं जा सकते जब तक कि वह लोग वहां से निकल न जायें।" फिर बड़ी ढिटाई और बेशर्मी से कहने लगे "जब वो निकल जायेंगे तो हम प्रवेश करेंगे" उन दो आदमियों ने जो अल्लाह से डरने वालों में से थे। जिनपर अल्लाह ने बड़ा फ़ज़ल किया था कहा कि तुम उन पर दरवाजे तक चलो। जिस समय तुम दरवाजे पर पांव रखोगे उस समय विजयी हो जाओगे। और अल्लाह पर भरोसा किये रहो अगर तुम इमान वाले हो" लेकिन उनपर कुछ असर न हुआ उल्टा कहने लगे अगर जाना इतना ही अनिवार्य है तो तुम अपने मोजिज़े के साथ दाखिल हो जाओ जब हम सुनेंगे कि तुम वहां प्रवेश कर चुके हो तब हम भी चले आयेंगे। और तुम्हारे साथ सही सालिम और ठाट से प्रवेश कर जायेंगे। "उन लोगों ने कहा था मुसा हम तो हरगिज कभी वहां न जायेंगे।

जब तक वो लोग वहां मौजूद है। तो आप और आप के रब चले जायें। दोनो लड़ भिड़ ले हम तो यहां से सरकेंगे भी नहीं।"

इस बात पर मुसा अ० को बड़ा क्रोध आया और वो उन लोग से मायूस हो गये। मूसा अ० अल्लाह से दुआ करने लगे थे मेरे परवरदिगार मैं अपनी और अपने भाई की जान पर एखतियार रखता हूं। सो आप हम दोनों के और इस बेहुक्म कौम के बीच फैसला कर दीजिए।" अल्लाह का हुक्म हुआ "कि

(शेष पृष्ठ २८ पर)

भारत के हम वीर सिपाही

हैदर अ़ली नदवी

साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
नाज़ मुझे इस भारत पर है
कितना हंसी यह मेरा घर है
अम्नो अमां का यह मजहर है
सीने से इसको लगायेंगे।
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
हम जान वतन को दे देगें
और अपना चमन बचा लेंगे
हम अत्याचार मिटा देंगे
हम प्रेम की धारा बहायेंगे
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
भारत–वीरो आगे आओ
नफ़रत की तुम आग बुझाओ
देश शांति के द्वीप जलाओ
मौला खुश हो जाएंगे।
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
प्रेम की नदियां बहा दो तुम
हर जुल्म यहां से मिटा दो तुम
भारत की शान बढ़ा दो तुम
यह जालिम फिर शर्माएंगे
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
बेबस और मजबूर हैं जो
हालाते जहां से चूर हैं जो
मुश्किल में महसूर है जो
उन सबको गले लगायेंगे
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
हर सम्त यहां है जुल्म सितम
है ऊंच नीच का फैला चलन
इस देश के हैं रखवाले हम
यां अम्न की शम्अ़ जलायेंगे
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
इन्सान हैं हम इन्सान रहें
खूंखार दरिन्दे हम न बनें
शैतान से हम सब दूर रहें
हम मानवता फैलाएंगे।
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
शान्ति डगरसे जो हैं भटके
उनको बतायें हम बे खटके
जीवन मरण है वश में रब के
कष्ट से ना घबरायेंगे।
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।
या रब देश फले और फूले
उन्नति में यह गगन को छू ले
हैदर की यह विन्ती सुन ले
एहसां तेरा न भुलाएंगे।
साहस धैर्य को लेकर हम
शान्ति यहां पर लायेंगे
भारत के हम वीर सिपाही
आगे इसको बढ़ायेंगे।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

0522-508982
अनस मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

एकता या एक रंगी

सैयद शिहाबुद्दीन

कहते हैं कि गुजरात में कत्ल की जाने वाली औरतों के साथ ज़ियादती करने वाले और आग लगाने वाले कार्यरत या बेरोजगार और निर्धन दलितों और आदिवासियों को किराये पर लिया गया था। प्रश्न यह है कि उन्हे किराये पर किसने हासिल किया' और उन की सेवाओं का भुगतान किसने किया ? जाहिर है उन्हीं पार्टियों ने जिन का भविष्य नफ़रत,और हिंसा की योजनाओं की सफलता पर निर्भर है और इस शैतानी प्रोग्रामों के लिए फंड किसने दिया? शिक्षित मध्य वर्ग ने और प्रभावशाली वर्ग ने भी (जो उस समय जब शो अपनी चर्म सीमा पर था, वह शानदार गाड़ियों में घूम रहे थे, और मोबाइल पर अपने दोस्तों को लूट में भाग लेने और घरों को जलाने, ब्लातकार की शिकार औरतों और बच्चों की जली और अधजली लाशों के दृश्य का मजा लूटने के लिए बुला रहे थे।) उनकी मदद से "दूसरों" को उन के घरों से बेघर करने, उनके सामाजिक व आर्थिक बाइकाट करने और उन्हें कत्ल करने के लिए लोगों को उत्तेजित करने के उद्देश्य से झूठी अफ़वाहें फैलाईं। हैन्डबिल और पर्चे बांटे। उन्हें सम्प्रदायिक कहना या हिन्दुत्व का आतंकवादी कहना काफी नहीं हो सकता। हमें इस प्रकार के अपराधिक ज़ेहनियत (मनोवृत्ति) रखने वालों की विशेषता बयान करने के लिए कुछ नई शब्दावली बनानी पड़ेगी।

एक नदी की कल्पना कीजिए जिस में बाढ़ आई हुई हो। पानी के भंवर में एक बच्चा गिर जाता है। उसको निकालने की समस्या है। एक आदमी जो तैरना जानता है, बच्चे को बचाने के लिए नदी में कूद जाता है। एक दूसरा आदमी जो तैरना तो जानता है परन्तु इस जांच में लग जाता है कि बच्चा हिन्दू है या मुसलमान ? ऐसे में यह कहना बहुत आसान है कि पहला आदमी सिकूलर और इंसानियत पसंदी के जज्बे की नुमाइंदगी करता है और दूसरा सम्प्रदायिक जेहनियत का है। परन्तु यहां एक तीसरा आदमी है जो "दूसरों के बच्चों को तूफानी नदी में फेंकता है। हम ऐसे व्यक्ति के लिए क्या शब्द प्रयोग करेंगे ? इंसानियत के माथे का कलंक? इसके लिए कोई उचित शब्द न मिलने पर उसे सुपर (अत्यंत) सम्प्रदायिक कहना पड़ेगा। बड़े पैमाने पर "दूसरों" के खिलाफ़ इस प्रकार की बरबरता के लिए "जदीद दुन्या" (एक पत्रिका) पहले ही एक नाम दे चुका है। इसे नस्ली सफ़ाया कहा जा सकता है। कानूनी विशेषज्ञ इसे नस्लकुशी (वंश सफाया) और इंसानियत के खिलाफ घिनावना अपराध कहते हें।

हिटलर ने यह घिनावना काम यहूदियों के खिलाफ भरपूर अन्दाज में और आधुनिक टेकनालोजी द्वारा अंजाम दिया और उनमें से लाखों लोगों को गैस के चैम्बरों में डाल कर उनका नामोनिशान मिटा दिया। सावरकर और गोलवार कर से लेकर हिन्दुत्व के लगभग सभी लीडर हिटलर के बड़े प्रशंसक रहे हैं और अब भी उन्हें जो खुद को आर्यन करार देते हैं, आज उनके अनुयायियों ने हमारी धर्ती पर तबाही मचाने के लिए पहला कदम उठाया है। क्या हमारे बुद्धिजीवियों को इस प्रकार के निर्दयतापूर्ण अत्याचार के विरुद्ध बग़ावत नहीं करनी चाहिए? क्या हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए पहले गिन्ती करें कि उन्होंने कितने लोगों को क़त्ल किया? .....

.....और अब भी वह सब्र व सहनशीलता की बात करते हैं। तमाम इंसानों को खुदाई मशअ़ल को आगे लेकर चलने वाला मानते हैं और सभी धर्मों और मजहब के नजात के लिए सत्य मार्ग के रूप में सम्मान देने की बात करते हैं। उन्होंने कौम का विभाजन कर दिया, "दूसरों" के खिलाफ नफ़रत का संघर्ष जारी किया। उन्होंने "दूसरों" को क़त्ल करेने, ब्लातकार करने, आग लगाने उन्हें अपनी पहचान को समाप्त करने, अपने मजहब, सभ्यता भाषा, जीवन शैली और आहार को छोड़ने, अपनी टोपी लपेट देने, दाढ़ी मुंडाने, अपना लिबास यहां तक कि नाम भी तब्दील करने के लिए धमकाने के उद्देश्य से लोगों को भड़काया और उन्हें हथियार सप्लाई किये और प्रशिक्षण भी दिया। जी हां तुम सब हिन्दू हो। तुम में से कोई मुहम्मदी हिन्दू है कोई

मसीही हिन्दू है, कोई नानकी हिन्दू है। हिन्दू धर्म की पवित्र गंगा में शामिल क्यों नहीं हो जाते ? इसी खेल का नाम भारतीयता है। बात यहीं समाप्त नहीं होती बल्कि असल मामला "दूसरों" को अपने अन्दर समोलेने का है।

हम सब एक हैं, एक ही मां की औलाद हैं, एक ही धरती पर पैदा हुए हैं। हम सब भारतीय हैं, और हिन्दू नहीं हैं। उस समय भी नहीं जब उनके लिए नफरत की फ़सल काटने और गैर हिन्दुओं की पहचान का समय आता है। हमारा भारत बहुधर्मी, विभिन्न भाषाओं विभिन्न सभ्यताओं, विभिन्न वंशज का देश है। यह विभिन्न जीवन शैली और विभिन्न रूचियों और पहलुओं वाला देश है। अपने इन अनेक भिन्नताओं के बावजूद हम एक हैं। जब हमारा देश उन्नति की तरफ एक क़दम बढ़ाता है तो इससे हम सब लाभान्वित होते हैं। यदि हमारे देश को कोई झटका लगता है तो इससे हम सब को दुख होता है। यह एकता है और हमारी एकता को उस समय आजमाया जाता है जब सामाजिक हिंसा फूट पड़ती है और आप हिंसा का शिकार होने वाले हैं हर व्यक्ति को अपना भाई ब्लात्कार की शिकार औरत को अपनी बहन और हर जलते हुए घर को अपना घर समझते हैं, चाहे आप का यह एहसास अंतराष्ट्रीय या आप का रहम का जज्बा कुछ भी हो। आदर योग्य है परन्तु एकता के नाम पर वायरस का इंफेक्शन हो गया है, मजहबी, भाषाई तौर पर बल पूर्वक या किसी और तरीके से मुख्य धारा में शामिल करने की बात करता है या जब सामाजिक एकरूपता को अपना उद्देश्य बना लेता है, सबको एक ही वर्ग बनाने का अमल इख्तियार करता है और बल और ज्यादती अपने काम करने का तरीक़ा करार देता है और जब समाज अपने सिरों (सदस्यों) के बीच किसी भी आधार पर भेदभाव करता है तो उसका नतीजा विभाजन ही होता है और बेचैनी और निराशा बग़ावत और दंगा कुछ अधिक दूर नहीं रह जाता। बलवान गिरोह "दूसरों" को अपने सांचे में ढलने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। यह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है। हर व्यक्ति, हर गिरोह एक दूसरे से उसी प्रकार भिन्न है जिस प्रकार किसी पेड़ का एक पत्ता दूसरे पत्ते से भिन्न है और हर पेड़ पर विभिन्न प्रकार के पत्ते होते हैं। क्या आप किसी पेड़ के तमाम पत्तों को काट कर एक साइज का कर सकते हैं? क्या आप सभी पेड़ों को एक ही डिजाइन के पततों के विकास पर मजबूर कर सकते हैं ?

कौमी एकता का रास्ता आपसी मेल मिलाप और किसी भी प्रकार के बरतरी के एहसास से, सभी पहचानों के सम्मान, सम्प्रदायों के बीच भ्रम, जब्र या धौंस, धमकी से बचने से, एक ही सभ्यता को मनवाने, या नस्ली, भाषाई या धार्मिक मुख्य धारा में सम्मिलित कर लेने की धमकियों को दूर करके बराबरी, इंसाफ से होकर गुजरता है।

परेशानी की बात यह है कि कौम परस्ती का शोरमचाने वाले और देश प्रेम के नाम पर हंगामा करने वाले अक्सर हमें एकता और एकरंगी के दर्मियान बहुरंगी में सन्तुलन और एक रंगी फीके पन के दर्मियान धोका देने की कोशिश करते हैं। अनजाने में एक बड़ी राजनीतिक पार्टी जो सेकूलरिज़्म की बात करती है, एक खास धर्म की शानदार विशेषता के गुन गाती है और इस प्रकार दूसरे धर्मों का मर्तबा घटाती है। शायद इस का अर्थ है कि बहैसियत कौम हम मानसिक (नफ़सियाती) तौर पर अपनी सोच सीमित कलचर के तौर पर स्वीकार करने के पाबन्द हैं। आज सेकुलर और फिरका परस्त (सम्प्रदायिक) हिन्दू के दर्मियान अन्तर भारत की तस्वीर हिन्दू राष्ट्र के तौर पर खींचने के आधार पर नही है बल्कि राष्ट्र में गैर हिन्दू के लिए स्थान के निर्धारण में हैं। सेकुलर हिन्दू इन के अधिकार की वकालत करता है और उन्हें सुरक्षा प्रदान करना चाहता है। सम्प्रदायिक हिन्दू उनको देश निकाला, उन्हें धमकाना या त्रिशूलों से भयभीत करना, समय समय पर उनका योजनाबद्ध ढंग से क़त्ले आम करना और उससे भी बढ़कर उन्हें हिन्दू समाज में विलीन कर लेना चाहता है। क्या हम अहिंसा के क़ायल नहीं हैं। हम बेहतरीन इंसान हैं। हम अपने हाथों को खून में कैसे रंग सकते हैं ? "दूसरों" को सबक सिखाने की जरूरत है ताकि वह जान ले कि उन्हें उन लोगों का सम्मान करना चाहिए जो इस देश के असल मालिक हैं और उनके लिए अपनी शुभकामनाएं रखनी चाहिए, उनकी तमाम मांगों और आदेशों के सामने सिर झुका देना चाहिए।

इस बात को साफ करने के लिए हमारे शिक्षित हिन्दू बुद्धजीवी भी इस हिन्दू सोच में शरीक क्यों हो जाते हैं। हमें प्राचीन काल के इतिहास का अध्ययन करना होगा। वह सब गुलामी के एक हजार साल के बाद आजादी

के एहसास में बराबर के शरीक हैं। इन सब के जेहनों में यह बात भी बैठी हुई है कि मुस्लिम काल में हिन्दुओं को भयानक समस्याओं का सामना करना पड़ा और यह कि अब हिन्दुओं को अपने देश पर शान्दार बालादस्ती (सत्ता) हासिल करना चाहिए और उसको अपनी मन पसन्द शक्ल देनी चाहिए। वह समझते हैं कि संवैधानिक (आईनी) पोज़ीशन कुछ भी हो भारत हिन्दु राष्ट्र है जिसमें हिन्दू राज होना चाहिए और शासन व्यवस्था और अधिकार का हर पहलू सत्ता को जाहिर करने वाला होना चाहिए।

संघ परिवार जिस ज़हर को हमारी कौम के खून में पछहत्तर साल से फैलाता रहा है यद्यपि अभी वह अपना फैसलाकुन (निर्णायक) असर नहीं दिखा पा रहा है और हमारे ५० प्रतिशत लोगों पर भी काबू नहीं प्राप्त कर पाया है परन्तु चिन्ता की बात यह है कि सेकुलर अक्सरियत (बहुसंख्यक) बुन्यादी सोच से समबद्ध है और बुराई के नक्शे से बेखबर है और संघ परिवार के उद्देश्य वे सिद्धान्त के समायोजन को नहीं जानती ।

भारतीय हिन्दुओं की यह हालत किस प्रकार बनी? मुझे एक बड़े मेढ़क की कहानी याद आ रही है जिसे कुछ लोग शायद खाने के लिए उबालना चाहते थे। चुनानचः उन्होंने एक बरतन में पानी उबाला और उबलते हुए पानी में डाल दिया। जैसे ही मेडक उबलते हुए पानी में गिरा उसने बाहर छलांग लगा दी। तब मेढक खानेवाले एक दूसरे पर आरोप धरने लगे उन्होंने मेढक को सादे पानी में रखा और पानी को धीरे–धीरे गर्म करने लग गये। धीरे – धीरे तापमान बढ़ने लगा। फलस्वरूप मेढक बेहोश हो गया। इस प्रकार मेढक को उबालने में कोई परेशानी नहीं हुई।

भारत के लोगों के साथ इसी कहानी वाले मेढक जैसा व्यवहार किया गया। पानी उबलने के तापमान पर पहुंच रहा है। मेढक खाने वाले उसे क़त्ल करने के लिए तैयार हैं।

सेकुलर राजनीति की इस प्रकार हदबन्दी नहीं की जा सकती जैसा कि यह वक्ती (सामाजिक) गणना वाली मजबूरी में हमेशा होता है और सत्ता की इच्छक एक पार्टी अपने नाअहली (अयोग्यता) में सुधार का रोल अदा कर रही है।

अनजाने तौर से सही बहुत दिनों से जारी सेकुलरइज्म की अवहलेना ने सेकुलर व्यवस्था को इस सीमा तक तैयार कर दिया कि इसके नाम पर दो रुखी बातें होने लगी हैं। हम हिन्दुत्व कलचरल नेशनलइज्म हिन्दू राष्ट्रवाद और हिन्दू राज की बात करते हैं और फिर भी हम सेकुलर हैं। अतः सेकुलर तालीम और जनता से सम्बन्धित सेकुलर कोड का कड़ाई पूर्वक पालन ही भारतीय दिमाग को इन सम्प्रदायिक ताकतों की पैदा की हुई भावनाओं से छुटकारा दिला सकता है जो लगभग एक सौ साल से बड़े योजनाबद्ध ढंग से बिना किसी रूकावट के बड़ी हद तक कोई नोटिस लिए बिना बल्कि साहसी ढंग से तैयार कर रही हैं।

अतः राजनीति को सेकुलरइज्म को नया रूप देना है। इसे इस की तमाम बुराइयों, इसकी तमाम बढोत्तरियों और प्राचीन परम्पराओं को जीवित करने की कोशिश और तमाम धार्मिक भ्रांतियों से पाक करना है। सामूहिक और व्यक्तिगत ढंग से हमें समाजी अमन, ग्रुपों के बीच सद्भावना और भाई चारा पैदा करने के लिए कोशिश करनी है। तमाम भारतीयों के लिए इंसाफ बराबरी को यकीनी बनाना और कानून की हुक्मरानी इंसानी अधिकार हर ग्रूप के हिस्सेदार वाले भारतीय माडल को बढ़ावा देना है जो केवल इस देश के राज्यों को ही नज़र न आए बल्कि भविष्य के सारे संसार के राज्यों को दिखाई दे। यह वह उच्च स्थान है जो हम भारतीयों के लिए न्यूकिलीयाई बमों और दूर तक मार करने वाले मिजाइलों से अधिक गर्व का साधन बन सकता है।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

अत्याचारी तथा उत्पीड़ित

उन अत्याचारियों ने ईमान वालों में इस के सिवा कोई एब नहीं पाया कि वह प्रबल स्तुत्य (अ़ज़ीअ़हमीद) अल्लाह पर ईमान लाए थे जिस का प्रभुत्व आसमानों में भी है और ज़मीन में भी, और वह हर बात से अवगत है।

जिन लोगों ने ईमान वालों को कष्ट दिया और तौबा न की उन के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब (दंड) है और उनके लिए जलने का अ़ज़ाब है और जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे उनके लिये जन्नत के बाग़ होंगे जिनमें नहरें बहती होंगी और यह बड़ी सफलता है।

(पवित्र कुर्आन ८५:८–११)

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(तीसरी क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

पति की सेवा

जिसके साथ तुम्हारी शादी हो अगर वह ग़रीब हो तो मालदार समझो। उसकी इज्ज़त करो। जो कहें उस के खिलाफ़ न करो। बिना इजाज़त किसी काम में हाथ न लगाओ। उनकी खुशी अपनी खुशी पर मुकद्दम रखो। हर वक्त उनके आराम का ध्यान रखो। जो कुछ तुम्हें दें खुश हो के ले लो। और जिस काम को कहें ऐसी खूबी के साथ करो कि वह खुश हो जायें। उन्हें इस क़दर आराम दो कि वह निश्चिंत हो जायें और उन्हें अपनी थ्रोड़ी आमदनी से तकलीफ न हो। ज़िन्दा दिल होकर रहें। अपने साथ उठने बैठने वालों में इज़्ज़त पायें। उनकी ज़रूरत अपनी जरूरत से पहले पूरी करो। उन्हें जहां तक सम्भव हो अच्छा खिलाओ। कपड़े उनकी ग़रीबी के दौर में खुद सिल कर पहनाओ। काम उनके सब अपने हाथ से करती रहो किसी पर न डालो, चाय नाश्ता वक्त से पहले तैयार रखो, कोई बात फिक्र की उनसे न कहो। फ़रमाइश न करो, अगर वह न कर सकें तो मलाल होगा। तुम्हारी क़िस्मत में है तो ज़रूर मिलेगा, फ़रमाइश बेकार है। जो ज़रूरत हो जहां तक हो सके तुम्हीं पूरी किया करो, मर्दों को तकलीफ न दो, कुछ एक धैर्यवान नहीं होते। उन्हें बड़ी तकलीफ़ होती है।

शौहर से कैसे पेश आना चाहिए।

जब मर्द घर में आये, आते ही कोई चिन्ता वाली बात न हो, मालूम नही किस ख़्याल में आये हों और क्या ख़्याल पैदा हो जाये। खाने के वक्त ऐसी दिलचस्पी की बातें करो कि वह खुश होकर खायें। बेफिक्री में दाल मिस्ले कोरमा के मालूम होती है। फिक्र में हजार नेमत ज़क़्क़ूम (कांटेदार जहरीला पौधा) हो जाती है। इसका तजुर्बः हो चुका है। बाज़ बीवियां आते ही तमाम किस्सा कह सुनाती हैं। उठना, बैठना, खाना, पीना दुश्वार हो जाता है। आखिर वह भूखे ही उठ जाते हैं। खुदा भी नाखुश होता है और वह भी। ऐसी अक़ल से खुदा बचाये। अगर खुदा ने तुम्हें कुछ भी लियाक़त दी है तो उनके ग़म ग़लत करो। मुसीबत बटाओ। लगी गुझाओ। आराम दो। तकलीफ़ में हिस्सा लो अगर उन्हें फिक्रमन्द देखो तो कोशिश करो कि यह परेशानी दूर हो जाये। अगर कर्ज़दार हो जायें तो तुम अपनी दस्तकारी (हस्तकला) और मेहनत से कर्ज़ से छुटकारा दिला दो, तुम्हारे पास नक़द हो तो हाथ में रख दो, या ज़ेवर उतार कर दे दो कि यह कर्ज़ अदा करने के लिए है, भले ही वह तुम्हारी मैके का क्यों न हो, तुम बिला तकल्लुफ़ उतार दो, कुछ ख़्याल न करो। उन पर एहसान न रखो। यह न समझो कि हमने ऐसा किया है – वरना सब किया कराया बेकार है।

सुघड़पन :

हर समय उनकी सेवा में रहो। आराम पहुंचाने से ग़ाफिल न रहो। अगर वह तुम्हारी इच्छा के अनुसार नहीं दे सकते तो सब्र करो इस लिए कि उन के पास इतना नहीं है। अगर तुम समझ सकती हो या तुम्हारी तक़दीर अच्छी है तो इससे बहुत कुछ आप पैदा कर लो। कुल काम तुम करो। सुव्यवस्था से पैसा बचाती रहो, कपड़े तुम सियो, खाना तुम पकाओ, बच्चों की देख–भाल तुम करो। यह सब पैसा बचेगा तो तुम भी आराम करोगी और उनको भी राहत पहुचाओगी। अगर पैसा काफ़ी है तो मैं यह नहीं कहती कि आप तकलीफ़ उठाओ। जो बात वह कहें खुश होकर जवाब दो। अगर वह किसी समय गरम हों तो तुम नरम हो जाओ, जो कुछ वह कहें उस पर राज़ी हो जाओ, अगर वह तुम्हारे किसी काम से खुश न हों तो न हों मगर तुम उनका हक़ अदा करती रहो कि खुदा तुम से खुश रहे। तुम्हें यह लाज़िम है कि जो कुछ कमा कर दें तुम उसी के अनुसार काम करो, तुम तकलीफ़ उठाकर उनकी जरूरतें पूरी करो। ऐसा उजला घर रखो कि देख कर हर एक खुश हो। मर्द को जो कुछ मिलता है तुम्हें लाकर देता है अब तुम जो चाहो करो। तुम अपनी सुव्यवस्था से चाहो तो खाक का घर लाख का कर दो, और फूहड़पन से चाहो तो बर्बाद कर

बैठो। देखो सलीकः दुनिया में अजब चीज़ है। व्यवस्थित कभी परेशान नहीं होता। अव्यवस्था से मर्दों को और तमाम घर को तकलीफ़ होती है। आये दिन मुसीबत झेलना पड़ती है। कभी चैन से रोटी मयस्सर नहीं आती। मर्द परेशान हो जाते हैं। मर्द कहां तक पूरा करें, आखिरकार वह हाथ उठा लेते हैं, और दूसरी शादी कर लेते हैं, फिर यह ज़िन्दगी वबाल बन जाती है बाल बच्चे भी अज़ाबे जान हो जाते हैं।

शौहर को अपना बन ाने का आसान तरीका :

सलीक़ामन्द (सुघड़) औरतें हमेशा चैन से ज़िन्दगी बसर करती हैं। देखो जो माहाना मिलता है ऐसे इन्तेज़ाम से करो कि कुछ बचा रखो। समय पर तुम्हें किसी से मांगना न पड़े और पति को ग्लानि (कोफ़्त) न हो और वक़्त पर तुम सब से बेहतर निकलो। सब तुम्हें इज़्ज़त की निगाह से देखें। तुम्हारी ही खुशी से काम करें। मर्द तुम्हारे अपने और आज्ञापालक (फरमांबरदार) हो जायें, तुम्हारी ही नज़र से देखें, तुम्हारी ही खुशी से काम करें। सुघड़पन भी एक ऐसी सुन्दरता है जिसकी रौशनी दूर तक पहुंचती है। हजारों सुन्दरियां फूहड़पन के कारण बदसूरत मालूम होती हैं। शरीफ़ मिज़ाज मर्द अक्सर सूरत परस्त से कहीं ज़्यादा सीरतपरस्त होते हैं। जो औरतें मर्द की ताबेदार व फरमांबरदार होती हैं, कैसे ही बद मिज़ाज मर्द हों अगर औरतें चाहें तो अपना बना सकतीहैं। यह कुछ दुशवार नहीं है, मगर अफसोस है बाज़ बीवियां समझती हैं कि जितना तेज़ी दिखायेंगे उतना यह ताबेदार रहेंगे यह विचार गलत है। और वह कुछ दिन ख्याल भी करेंगे तो मुहब्बत से नहीं दंगा फसाद, लड़ाई झगड़े से बचने के लिए। यह मुहब्बत नहीं है। जो औरतें खौफ़ से या दुनिया की शर्म से, या खुदा के डर से सेवा करती रहती हैं वही आगे चलकर प्रिय हो जाती हैं। मर्द उनके आराम के इच्छुक रहते हैं। उनकी मनोकामना पूरी करते हैं। उनकी कोई तकलीफ़ गवारा (पसन्द) नहीं करते जो कुछ कमाते हैं लाकर हाथ में रख देते हैं कभी हिसाब नहीं लेते। वह बड़े आराम से बैठकर ज़िन्दगी बसर करती हैं। यह सारी खूबियां अकलमन्दों को नसीब हैं जिसको अक़्ल मिली सब कुछ मिला। मूर्ख इससे वंचित हैं। खुदा ने चाहा तो अक़्लमन्दों की दीन व दुनिया दोनों बेहतर होंगी। बेवकूफी की ज़िन्दगी रो रो कर बसर होती है। औलाद भी साथ नीं देती, मर्दों का क्या ज़िक्र है। तुम्हें लाज़िम है कि अगर अक़्ल नहीं तो फ़िक्र से काम लो, इससे कुछ न कुछ अक़्ल आ जाती है। (जारी)

प्रस्तुति व अनुवाद – मो० हसन अन्सारी

ऐ ईमान वालो। बहुत से गुमानों से बचा करो क्योंकि बाज गुमान गुनाह होते हैं। और किसी की टोह में न रहा करो। और एक दूसरे की गणित मत किया करो।

(सूर–ए–हुजुरात)

अपने को बदगुमानी से बचाओ कि गुमान सब से झूटी बात है। (मुस्लिम)

सच आदमी को नजात देता है और झूट हलाक कर देता है। (हदीस)

एक तारीख़ी वाक़िआ

एक जुमे को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ के लिये मस्जिद जा रहे थे, रास्ते में हज़रत अ़ब्बास के मकान का परनाला था। उस परनाले से गन्दा पानी उमर (रज़ि०) के कपड़ों पर गिर गया। आप ने घर लौट कर कपड़े बदले और परनाले को हटवा दिया। हज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) आप के पास गये और कहा कि यह परनाला तो रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस जगह लगाया था। यह सुन कर हज़रत उमर (रज़ि०) ने हज़रत अब्बास (रज़ि०) से कसम दिला कर कहा कि आप मेरे ऊपर खड़े होकर परनाला फिर उसी जगह लगा दीजिए जहां रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लगाया था चुनांचि हज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) ने ऐसा ही किया और परनाला फिर उसी जगह लगा दिया गया।

(सीरत खुलफ़ाए राशिदीन पृष्ठ ८६)

(सीरत उमर फ़ारुक़–इब्नुलजौज़ी पृष्ठ–१३१)

अपने पड़ोसी से अच्छा सुलूक कर अगर तू ऐसा करेगा तो मोमिने कामिल होगा।

ज़ियादा न हंस इस लिये कि ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा बना देता है।

(मिश्कात)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

❑ सोशलिस्ट बआ़स पार्टीके सिक्रेटरी जनरल क़ासिम सलाम ने लन्दन से प्रकाशित होने वाले अरब अखबार अल्कुद्स को इंटरव्यूव देते हुए बताया है कि इराक़ी लीडरशिप सुरक्षित है और सद्दाम हुसैन सहित सभी लीडर्स सुरक्षित स्थान पर हैं। इसके अतिरिक्त जो लोग इराक़ से निकल गए हैं वह भी सुरक्षित हैं। इससे पहले अप्रैल में इस समाचार पत्र में एक पत्र प्रकाशित किया गया था जिसे सद्दाम हुसैन का पत्र बताया गया था। इस पत्र में सद्दाम हुसैन ने इराक़ी जनता से अपील की थी कि वह अमरीकी और ब्रिटिश फौजों के खिलाफ उठ खड़े हों। क़ासिम ने बताया कि सद्दाम हुसैन युद्ध के दर्मियान इराक़ में थे और बग़दाद के पतन के तीन रोज बाद १२ अप्रैल को उन्हेांने इराक़ छोड़ा। वह ज़मीनी रास्ते से पहले शाम पहुंचे फिर उर्दुन गये और वहां से हवाई जहाज द्वारा यमन की राजधानी सनआ़ पहुंचे। सलाम ने बताया कि बग़दाद हवाई अड्डे पर कब्ज़ा करने वाली अमरीकी फौज़ के खिलाफ़ उन्होंने खुद मोर्चा संभाला था। उन्होंने मज़ीद बताया कि बग़दाद हवाई अड्डे पर अमरीकियों को इराकी टैंकों और आत्मघाती दस्तों ने चारों तरफ से घेर लिया था। लेकिन बाद में उनकी रिपब्लिकन गार्ड के कमान्डरों ने उन्हें धोका दिया।

यह पूछे जाने पर कि बग़दाद इतनी आसानी से कैसे फ़तह हो गया कासिम सलाम ने बताया कि रिपब्लिकन गार्ड के उच्च अधिकारी हिम्मत हार चुके थे और उन्होंने अपने अधीनस्त अधिकारियों को यह संकेत देना शुरू कर दिया कि सद्दाम का खेल समाप्त हो गया।

❑ सऊदी अरब में शीघ्र मानव अधिकार समिति स्थापित की जाएगी जो अपनी सरगर्मियों में आजाद रहेगी परन्तु उसे सऊदी सरकार की पूरी मंजूरी प्राप्त रहेगी।

विदेश मंत्री प्रिंस सऊदुल फैसल के हवाले से कहा गया है कि शाह फहद ने निजी स्तर पर मानव अधिकार की एक कमेटी स्थापित करने का आदेश दिया है जो जल्द क़ायम कर दी जाएगी। प्रिंस के हवाले से इस के अतिरिक्त यह भी कहा गया है कि सरकारी स्तर पर भी मानव अधिकार की संस्था कायम की जा रही है। पड़ोसी देश क़तर ने भी इसी सप्ताह एक मानवअधिकार कमेटी बनाने का एलान किया है जो सरकार को परामर्श देगी कि मानवाधिकार सुरक्षा को किस प्रकार बढ़ावा दिया जाए।

❑ सऊदी अरब सरकार देश भर में इस्लामी केन्द्र, मस्जिदें, और इस्लामी अकेडमियों के निर्माण और स्थापना पर ही जोर नहीं दे रही है बल्कि उसने पश्चिमी दुनिया की प्राचीनतम यूनिवर्सिटी हारवर्ड लन्दन, और मासको में इस्लामिक स्टडीज़ करने का उद्देश्य विभिन्न सभ्यताओं के बीच सम्पर्क कायम करना, गैर मुस्लिमों के सामने इस्लामी तालीमात की व्याख्या और उन भ्रांतियों को दूर करना है जो पश्चिमी बुद्धजीवी इस्लामी कानून को लागू करने के हवाले से फैला रहे हैं। सऊदी सरकार इन यूनिवर्सिटियों में इस्लामी विचार धारा, विरासत और इंसानी सभ्यताओं पर उन के प्रभाव के बारे में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति भी देती है। इन चेयरों की स्थापना से प्रचार प्रसार के किया कलापों में सऊदी सरकार की दिलचस्पी का पता चलता है। यह चेयर इस्लाम की शिक्षा को पेश करने और दीने इस्लाम को एक ऐसी जीवन शैली के रूप में पेश करने में महत्वपूर्ण रोल अदा कर रही है जो हिंसा, आतंकवाद और इंतिहापसन्दी को अस्वीकार करता है।

शाह अब्दुल अज़ीज़ चेयर

इस क्रम में कैलीफोरनिया यूनिवर्सिटी में शाह अब्दुल अजीज़ चेयर १९८४ में कायम की गई जिसका उद्देश्य इस्लामी और उस से सम्बन्धित कार्यों के बारे में वैज्ञानिक रिसर्च है।

शाहफ़हद चेयर :

हारवर्ड यूनिवर्सिटी संयुक्त राज्य अमरीका में बहुत ही महत्वपूर्ण और सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी गिनी जाती है जिसमें शिक्षा के तमाम क्षेत्रों में बहुमूल्य वैज्ञानिक रिसर्च की जाती हैं। इस यूनिवर्सिटी में शाहफहद चेयर की स्थापना १९९३ में हुई। इस चेयर की स्थापना का उद्देश्य इस्लामी स्टडीज के क्षेत्र में वैज्ञानिक रिसर्च से लाभ उठाना है। यहां इस्लामिक शरीअ़त से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन किया जाता है।

शाहफ़हद चेयर लन्दन यूनिवर्सिटी में भी क़ायम की गई जिसके लिए खादिमे हरमैन शरीफ (मक्का मदीना के सेवक अर्थात सऊदी बादशाह) ने दस लाख पाउण्ड स्टर्लिंग की सहायता दी थी।

समाज सेवा महा पुण्य